SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 02 • APRIL 2025

हिन्दी मासिक

अप्रैल 2025

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

हिन्दुस्तान इतिहास के निर्णायक मोड़ पर

आपसी ऐतिमाद और महब्बत पैदा करने के लिए हमें एक साहसी संघर्ष की ज़रुरत है, इस समय देश एक नाज़ुक मोड़ पर खड़ा है, एक रास्ता हमेशा के लिए तबाही और पतन की ओर जाता है, दूसरा रास्ता शान्ति और एकता की ओर जाता है। हर ऐसे मोड़ पर कुछ ऐसे लोग आजाते हैं जो तारीख़ का रुख़ मोड़ देते हैं।

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह.

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail:sachcharahi@nadwa.in
https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक)	60 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अप्रैल 2025 | वर्ष 24 | अंक 02

बुन्यादी और ज़रूरी बात

हिफ़ाज़ते इस्लाम के नारे तो बहुत बलन्द किये जाते हैं मगर अमली पहलुओं से हम ख़ुद दूर रहते हैं, इस्लाम कोई स्टेचू नहीं जिसकी हिफ़ाज़त के लिए लाओलशकर की ज़रूरत हो। आप अपने अन्दर इस्लाम समो लीजिए, आप भी सुरक्षित हो जाओगे और इस्लाम भी सुरक्षित हो जायेगा।

(शेख़ुल इस्लाम मौ0 हुसैन अहमद मदनी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इस्लामी इबादात	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
समाज की बुराईयाँ	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	12
सात चीज़ों से पहले	मौलाना मुफ़्ती मो0 तकी उस्मानी	14
शरीअ़ते इस्लामी की अहमियत	हज़रत मौ0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी रह0	16
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	19
आटोफिजी	इं0 जावेद इक़बाल	22
नैतिकता से खाली शिक्षा	मौलाना सै0 वाजेह रशीद नदवी रह0	24
ईद मनाने का अधिकार	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	26
अवध के नवाब और हिन्दू	शमीम इक़बाल खाँ	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	31
देश बन्धुओं से सम्बोधन	उ़ज़्मा भोपाली	33
नैतिकता स्वतन्त्रता का मूल आधार	आरिफ़ा ख़तून	36
उड़ने वाला जानवर	मायल ख़ैराबादी	38
स्वास्थ्य	डॉ0 रूपेन्द्र श्रीवास्तव	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हिज्रः-

अनुवादः—

वे बोले आप डरें नहीं हम तो आपको एक होशियार बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं(53) कहा क्या हमें बुढ़ापा लग जाने के बावजूद भी तुम हमें बेटे की ख़ुशख़बरी सुनाते हो आख़िर यह ख़ुशख़बरी किस आधार पर सुना रहे हो(54) वे बोले हमने आप को ठीक—ठीक ख़ुशख़बरी सुना दी तो आप निराश न हों(55) कहा अपने रब की रहमत (दया) से तो गुमराह ही निराश होते हैं (56) कहा तो ऐ अल्लाह के दूतो! तुम्हारा अभियान क्या है(57) उन्होंने कहा हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गए हैं[1](58) हाँ लूत के घर वाले इससे अलग हैं हम उन सब को बचा लेंगे(59) सिवाय उनकी पत्नी के, हमने तय कर रखा है कि वह उन्हीं लोगों में शामिल रहेगी जो पीछे रह जाने वाले हैं(60) फिर जब फरिश्ते लूत के घर वालों के पास पहुंचे(61) लूत ने कहा कि आप लोग तो और तरह के मालूम होते हैं(62) वे बोले बल्कि हम तो आपके पास वह चीज़ लेकर आए हैं जिसमें वे संदेह करते थे(63) और हम आपके पास अटल फैसला लेकर आए हैं और हम सच ही कहते हैं(64) बस आप रात के किसी भाग में अपने घर वालों को लेकर निकल जाइये और आप उनके पीछे—पीछे चलिए और तुम में कोई मुड़ कर न देखे और जहां तुमको आदेश है वहां चले जाओ(65) और उस काम का फैसला हमने उनको सुना दिया कि सुबह होते होते उन सब की जड़ कट कर रह जाएगी(66) और शहर वाले खुशियाँ मनाते आ पहुंचे(67) (लूत ने कहा) यह सब मेरे मेहमान हैं तो मुझे ज़लील न करो(68) और अल्लाह से डरो और मेरी इज़्ज़त न खो(69) वे बोले क्या हमने तुम्हें दुनिया जहान के समर्थन से मना नहीं किया था(70) उन्होंने कहा यह मेरी बेटियां मौजूद हैं अगर तुम्हें कुछ करना ही है[2](71) आपकी जान की क़सम[3]! वे तो अपने नशे में बिल्कुल ही धुत हो रहे थे(72) बस सूरज निकलते निकलते एक चिंघाड़ ने उनको आ दबोचा(73) तो हमने उसको उथल पुथल करके रख दिया और उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाए(74) बेशक इसमें वास्तविकता तक पहुंच जाने वालों के लिए निशानियां हैं(75) और वह बस्ती चलते फिरते रास्ते पर है[4](76) उसमें ईमान वालों के लिए एक निशानी है(77) और बेशक ऐका वाले भी अन्याय करने वाले थे[5](78) तो हमने उनसे बदला लिया और वे दोनों (बस्तियां) आम राजमार्ग पर थीं[6](79) और बेशक हिज्र वालों ने भी पैगम्बरों को झुठलाया[7](80) और हमने उनको अपनी निशानियां दीं तो वे उनसे मुँह फेरते रहे(81) और वे बड़े इत्मिनान के साथ पहाड़ों को काट—काट कर घर बनाया करते थे(82) बस सुबह होते होते चिंघाड़ ने उनको भी आ दबोचा(83) तो उनका यह सब किया धरा जरा भी उनके काम न आया(84) और हमने आसमानों और ज़मीन को और उन दोनों के बीच जो कुछ है उसको बिल्कुल ठीक पैदा

किया है बेशक क़यामत आकर रहेगी बस आप अच्छे ढंग से माफ़ कर दिया कीजिए[8](85) निश्चित ही आपका पालनहार ही सब कुछ पैदा करने वाला खूब जानने वाला है(86) और निश्चित ही हमने आपको ख़ूब पढ़ी जाने वाली सात आयतें और महानता वाला कुरआन दिया[9](87) हमने उनके विभिन्न गिरोहों को जो सुख सामग्री दे रखी है आप उनकी ओर ध्यान न दें और न उन पर दुखी हों और ईमान वालों के लिए अपनी भुजाएं झुकाए रखिये(88) और कह दीजिए कि मैं तो बस साफ़–साफ़ डराने वाला हूँ[10](89) जैसा कि हमने हिस्सा कर डालने वालों पर भेजा(90)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की कौम कुकर्म में लिप्त थी, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम समझाते थे मगर वे बाज न आते, अंततः फरिश्ते अज़ाब लेकर खूबसूरत नवजवानों के रूप में आ पहुंचे, क़ौम के बुरी आदत वालों ने देखा तो पहुँच गए, हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने क्योंकि अभी पहचाना न था इसलिए उनको डर हुआ कि इन मेहमानों के साथ भी दुर्व्यवहार न हो, उन्होंने अपनी कौम के लोगों को समझाना चाहा मगर वे नशे में चूर थे, फरिश्तों ने हज़रत लूत अलैहिस्सलाम को संतुष्ट किया कि हम अल्लाह के दूत हैं, अजाब लेकर आए हैं, आप अपने घर वालों के साथ रातों–रात निकल जाइये और आप ही पीछे रहें ताकि क़ौम के सदस्यों की निगरानी हो सके और कोई पीछे मुड़ कर न देखे, उनकी पत्नी उन्हीं दुष्टों के साथ थी, उसकी बर्बादी और विनाश का भी फैसला सुना दिया गया।

2. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम ने समझाना चाहा कि तुम्हारी पत्नियां मौजूद हैं जो हमारी बेटियों की तरह हैं तो उनसे अपनी वासना (इच्छा) पूरी करो और गलत काम मत करो।

3. अल्लाह तआला ने पैगम्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान की कसम खाई इससे आपकी उच्च पदवी की ओर संकेत है, हजरत अब्दुल्लाह पुत्र अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने किसी को पैदा नहीं किया जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा उसके करीब इज़्ज़त वाला हो, और मैंने नहीं सुना कि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा किसी की जान की क़सम खाई हो।

4. हज़रत लूत की क़ौम की बस्तियां उरदून के उपसागर मरदार के पास थीं, अरब के लोग जब शाम (सीरिया) की यात्रा करते तो वहाँ से गुजरते थे।

5. "ऐका" घने जंगल को कहते हैं ऐसा लगता है यह बस्ती जहां बाग थे मद्यन के अलावा है, हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम को दोनों क्षेत्रों का नबी बना कर भेजा गया था, भूगोल के माहिर मुसलमान मौजूदा मदयन के बारे में कहते हैं कि पहले इसी का नाम ऐका था, मद्यन से इसकी दूरी भी ज़्यादा नहीं है, बहुत से मुफस्सिरों ने मदयन को ही ऐका कहा है, वे कहते हैं कि इसकी हरियाली की वजह से इसको ऐका कहा गया है।

6. दोनों बस्तियों का मतलब है हज़रत लूत और हज़रत शुऐब की बस्तियां, दोनों ही उरदुन के आम राजमार्ग पर थीं, इससे आशय वह व्यावसायिक राजमार्ग है जो हिजाज हो कर यमन से शाम को जाता है, कुरआन मजीद में उसी को "इमाम–ए–मुबीन" कहा गया है, अरब की

शेष पृष्ठ ...08...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

अमानत और वादों के ख़्याल का बयानः-

मुनाफ़िक़ (कपटचारी) की तीन निशानियाँः–

मुनाफ़िक़– जो जाहिर में मुसलमान हो लेकिन अन्दर कुछ और कहे।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः मुनाफ़िक की तीन निशानियाँ हैं–

(1) जब बात करता है तो झूठ बोलता है।

(2) जब वादा करता है तो वादा ख़िलाफ़ी करता है।

(3) जब उसको अमीन (अमानतदार) बनाया जाता है तो ख्यानत और कपट करता है।

(बुखारी व मुस्लिम)

चार आदतें केवल मुनाफ़िक़ की हैंः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल–आस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः जिसके अन्दर चार आदतें हों वह पक्का मुनाफ़िक़ है। और जिसमें इनमें से कोई एक भी आदत होगी तो वह भी मुनाफ़िक़ ही की आदत है जब तक कि उसको छोड़ न दे। जब बात कहे तो झूट कहे, वादा करे तो वादा खिलाफी करे, अमानत में ख़्यानत करे, और जब लड़े तो गाली–गलोज करे।

(बुखारी व मुस्लिम)

अमानत का उठ जानाः–

हज़रत हुजैफः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हम से दो बातें कहीं, उनमें की एक मैंने देख ली, और दूसरी बात का इन्तिज़ार कर रहा हूँ। आप सल्ल० ने फरमायाः अमानत लोगों के दिलों की जड़ में उतरी, फिर कुरआन उतरा, लोगों ने कुरआन व सुन्नत का ज्ञान प्राप्त किया। फिर आप सल्ल0 ने हम से अमानत के उठ जाने के बारे में फरमाया कि आदमी एक नींद सोएगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जाएगी और उसका असर जले हुए निशान की तरह बाकी रहेगा, फिर एक नींद सोएगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जाएगी और उसका असर छाप की तरह रह जायेगा, जैसे तुम्हारे पैर पर चिंगारी गिर जाए और उससे छाला पड़ जाए, तुम उसको उभरा हुआ देखोगे जबकि उसमें कुछ नहीं है। फिर आप सल्ल0 ने एक कंकड़ी ली और अपने पैर पर लुढ़का कर दिखाया।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने हुजूर सल्ल0 के वादे को पूरा कर दियाः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि मुझसे हुजूर अकरम सल्ल0 ने फरमायाः अगर बहरैन का माल आ जाएगा तो मैं तुमको ऐसे–ऐसे दूँगा। बहरैन का माल जब आया तो हुजूर सल्ल0 की वफात हो चुकी थी। हजरत अबू बक्र रज़ि० ने ऐलान कराया कि जिससे हुजूर सल्ल0 का वादा हो या आप सल्ल0 पर कर्ज़ हो, हमारे पास हाज़िर हो। (यह ऐलान सुन कर) मैं आया और बताया कि हुजूर सल्ल0 ने मुझ से इस तरह फरमाया था, तो हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने लप भर कर दिया, मैंने उसको गिना तो पाँच सौ थे, फिर आप ने मुझसे फरमायाः इसका दो गुना और ले लो।

(बुखारी व मुस्लिम)

असल फैसला नियत पर होता हैः–

हज़रत जैद बिन अरक़म रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः अगर किसी ने अपने भाई से वादा किया और उसकी नियत पूरा करने की है और पूरा न कर सका और जो समय दिया था

उस पर भी नहीं आया तो वह गुनहगार नहीं होगा।

(अबू दाऊद व तिर्मिजी)

''वादा'' वादा है चाहे मामूली चीज़ का क्यों न होः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि0 बयान करते हैं कि एक दिन मेरी माँ ने मुझको बुलाया, अल्लाह के रसूल सल्ल0 उस वक्त हमारे घर में मौजूद थे, और माँ ने मुझ से कहा– इधर आओ, मैं तुम को कुछ (चीज) दूँगी, हुजूर सल्ल0 ने मेरी माँ से फरमायाः तुम उसको क्या देना चाहती हो? मेरी माँ ने कहाः मैं उसको एक खुजूर देना चाहती हूँ, हुजूर सल्ल0 ने फरमायाः अगर तुम उसको कुछ न देती तो वह झूठ में गिना जाता।

(अबू दाऊद)

अल्लाह और उसके रसूल के अहद (प्रतिज्ञा) को तोड़ने का वबालः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हमारी तरफ़ देखा और फरमायाः ऐ मुहाजिरीन (देश त्यागियों) की जमाअत (दल)! पाँच चीज़ों में जब तुम पड़ो (और मैं खुदा की पनाह माँगता हूँ कि तुम उसमें पड़ो) तो उसका अंजाम इस तरह होगा–

जब भी किसी कौम में बुराई और अश्लीलता फैल जाती है और खुले आम होने लगती है तो उस कौम में ताऊन (हैजा) की वबा फैल जाती है, और ऐसी घातक बीमारियां फैल जाती हैं जो उन से पहले के लोगों के ज़माने में न थीं।

और जब नाप–तौल में कमी होगी तो अकाल, परेशान हाली और तत्कालीन शासक के अत्याचार का निशान बनते हैं और जकात देना बन्द कर देते हैं तो बारिशों का होना रूक जाता है। अगर जानवर न हों तो बारिश ही न हो। और जब अल्लाह और रसूल सल्ल0 के अहद (वादों और प्रतिज्ञाओं) को तोड़ते हैं तो अल्लाह तआला दूसरी कौम के लोगों को दुश्मन बना कर उन पर सवार कर देते हैं जो उनके हाथों तक की चीजें छीन लेते हैं।

जब तक उनके पेशवा (अग्रणी नेता) अल्लाह की किताब से फैसला न करेंगे और अल्लाह तआला ने जो कुछ उतारा है उसमें मनमानी करेंगे तो अल्लाह तआला उनको आपसी सख्त लड़ाई–झगड़े में डाल देगा।

(इब्नि माजा)

❖❖❖

पृष्ठ ..06...का शेष

तमाम बड़ी–बड़ी आबादियां उसी के दाएं–बाएं ओर स्थित थीं।

7. हिज्र समूद क़ौम की उन बस्तियों का नाम था जिनकी ओर हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम भेजे गए थे।

8. पवित्र मक्के में न युद्ध की अनुमति थी और न बदला लेने की।

9. यानी सूरह फतिहा जो हर नमाज़ में बार–बार पढ़ी जाती है और इसको उम्मुल कुरआन भी कहा गया है, यहां इसी को महान कुरआन कहा जा रहा है और इसको याद दिला कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश हो रहा है कि मदद अल्लाह ही की ओर से आएगी, आप उसी की ओर ध्यान दें, दुनिया वालों की ओर ध्यान न दें और ईमान वालों के साथ नरमी का व्यवहार रखें।

10. यानी मैं इस कुरआन के द्वारा साफ़–साफ़ आदेश बताता हूं, आखिरत से डराता हूं, आगे कहा जा रहा है कि ऐसे ही हमने पहले के सम्प्रदायों यानी यहूदियों और ईसाइयों पर भी ऐसी ही किताबें उतारीं लेकिन उन्होंने कुछ भाग को बाकी रखा कुछ को मिटा दिया, इस प्रकार उन्होंने उसके हिस्से कर डाले।

❖❖❖

सम्पादकीय

इस्लामी इबादात

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

कलिम–ए–तय्यिबा अर्थात ''लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदु–र्रसूलुल्लाह'' इस्लाम में प्रवेश होने का दरवाज़ा है, कलिमे के शब्दों को जब इन्सान अपनी ज़बान से कहता है और दिल से उसका इक़रार करता है तो वह ईमान वाला हो जाता है, और कुरआन की भाषा में उसे ''मोमिन'' कहा जाता है फिर उस पर इस्लामी इबादात लागू हो जाती हैं। वह इबादत नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज के रूप में होती हैं, जिनकी अदायगी अल्लाह व रसूल के आदेशानुसार होती है, इन इबादतों की अदायगी में यदि इन्सान अपनी मनमानी करे तो वह अल्लाह के यहां स्वीकार योग्य नहीं। नमाज़ और रोज़ा यह दोनों बदनी इबादतें हैं, ज़कात केवल माली इबादत है और हज ऐसी इबादत है जो बदनी इबादत भी है और माली इबादत भी है,। नमाज़ 24 घण्टे में पाँच बार हर बालिग़ मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है चाहे वह ग़रीब हो या मालदार, चाहे पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, चाहे शहरी हो या देहाती, हर एक पर नमाज़ फ़र्ज़ है। रोज़ा पूरे साल में एक महीना रखा जाएगा, हज ज़िन्दगी में एक बार फ़र्ज़ है, वह भी केवल मालदार आदमी पर, ज़कात मालदारों पर कुछ शर्तों के साथ फ़र्ज़ है, हर इबादत निःस्वार्थ हो कर अल्लाह को राज़ी करने के लिए करनी चाहिए, इन सब इबादतों में एक ही भावना होती है, अल्लाह का आज्ञा पालन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुसरण, इन दोनों के अलावा तीसरी कोई भावना नहीं, पूरा इस्लामी जीवन इसी ध्रुव पर घूमता है, नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया तुममें कोई व्यक्ति उस समय तक पूर्ण ईमान वाला नहीं हो सकता जब तक उसकी इच्छा और ख़्वाहिश हमारी लाई हुई शरीअत के अनुकूल नहीं, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज सबकी महत्वता इसी पर निर्भर है। इस प्रस्तावना के बाद हम आपका ध्यान इस्लाम के एक मौलिक स्तम्भ ज़कात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, इस समय मुस्लिम उम्मत फ़ुजूल ख़र्ची, दिखावे और नुमाईशी कामों में बहुत ज़्यादा व्यस्त है, फ़ुजूल ख़र्ची करने वालों को कुरआन ने ''शैतान का भाई कहा है'' आप इस्लामी इतिहास जानते होंगे कि ख़लीफ़ा अव्वल हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने उस क़बीले के विरुद्ध जिहाद का आदेश दिया जिसने ज़कात देने से इनकार किया था, कुरआन ने जगह जगह पर नमाज़ के साथ ज़कात देने का आदेश दिया है, यहाँ पर हम कुरआन की उन आयतों का अनुवाद दे रहे हैं जाहां पर ज़कात न देने वालों पर अल्लाह ने अपनी नाराज़गी का इज़हर किया हैः–

''और जो लोग सोना चाँदी (माल दौलत) जोड़ कर रखते हैं और उसको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते (अर्थात उन पर जो ज़कात फ़र्ज़ है उसको अदा नहीं करते) ऐ रसूल तुम उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़बर सुना दो जिस दिन तपाया जायेगा उनकी दौलत को दोज़ख की आग में फिर दागे़ जाएंगे उनके माथे और उनकी करवटें और पीठें और कहा जाएगा यह है वह माल जिसको तुमने जोड़ा था अपने लिए तो मज़ा चखो अपनी जोड़ी हुई दौलत का''।

(सूरः तौबा, आयत नं0 34, 35)

इस आयत की कुछ

तफ़सील हुज़ूर सल्ल0 ने एक हदीस में भी फ़रमाई है। उस हदीस का मतलब यह है किः—

जिस व्यक्ति के पास सोना चाँदी (धन और दौलत) हो और वह उस माल का हक़ अदा न करे (अर्थात ज़कात आदि न दे) तो क़यामत के दिन उसके लिए आग की तख़तियाँ तैयार की जाएंगी, फिर उसको दोज़ख़ की आग में और अधिक तपाकर, उनसे इस व्यक्ति के माथे को, करवट को और पीठ को दाग़ा जाएगा और इसी प्रकार बार बार तख़तियों को दोज़ख़ की आग पर तपा कर उस व्यक्ति को दाग़ा जाता रहेगा और क़यामत के दिन की पूरी मुद्दत में इस अज़ाब का सिलसिला जारी रहेगा। और यह मुद्दत पचास हज़ार साल की होगी (तो इस तरह पचास हज़ार साल तक उसको यह सख़्त और दर्दनाक अज़ाब दिया जाता रहेगा)

कुछ हदीसों में ज़कात न देने वालों के लिए ऊपर लिखे अज़ाब के अलावा और दूसरे प्रकार के बड़े अज़ाब का भी ज़िक्र आया है। अल्लाह तआला हम सबको अपने अज़ाब से बचाए।

अल्लाह तआला ने जिन लोगों को धनी और मालदार बनाया है वह अगर ज़कात न दें और अल्लाह के आदेश के अनुसार उसके रास्ते में खर्च न करें तो निःसंदेह वह अपने ऊपर बड़ा ही जुल्म करने वाले और अल्लाह के एहसान को भुलाने वाले हैं, इसलिए उनको जो भी कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाए वह बिल्कुल सही और उचित है।

ज़कात न देना जुल्म और अत्याचार और अल्लाह की नेमतों का इनकार है। यह सोचने की बात है कि ज़कात व सदक़ात से वास्तव में अपने ही ग़रीब भाइयों की सेवा होती है, शरीअ़त की निगाह में जो लोग मालदार और धनवान लोग हैं वह ज़कात व सदक़ात नहीं देते हैं वह अपने ग़रीब और बेसहारा भाईयों पर अत्याचार करते हैं और उनका हक़ मारते हैं।

भाइयो! ज़रा सोचो हमारे आप के पास जो माल व दौलत है वह सब अल्लाह तआला ही का दिया हुआ है, और हम खुद उसी के बन्दे और उसी के पैदा किए हुए हैं, यदि वह हमसे हमारा सारा माल भी तलब करे बल्कि जान भी देने को कहे तो हमारा फ़र्ज है कि बिला उज़्र सब कुछ देदें।

यह तो उसका बड़ा करम है कि अपने दिये हुए माल में से केवल चालीसवाँ हिस्सा निकालने का उसने हुक्म दिया है।

अल्लाह का बड़ा करम व एहसान है कि उसने ज़कात और सदक़ा देने का बड़ा सवाब रखा है, ज़कात या सदक़ा देने वाला जो कुछ देता है अल्लाह तआला ही के दिये हुए माल में से देता है इसलिए यदि अल्लाह तआला उस पर कोई सवाब न देता तो बिल्कुल सही और ठीक था, मगर यह उसकी कृपा है कि उसके दिये हुए माल में से हम जो कुछ उसके हुक्म से ज़कात या सदक़े के तौर पर उसके रास्ते में ख़र्च करते हैं तो वह उससे बहुत ख़ुश होता है। और उस पर बड़े बड़े सवाबों का वादा फ़रमाता है, कुरआन मजीद ही में है जिसका अनुवाद प्रस्तुत हैः—

''जो लोग अल्लाह के रासते में अपना माल ख़र्च करते हैं उनके इस ख़र्च करने की मिसाल उस दाने की सी है जिससे पौधा उगे और उसमें सात बालियां निकलें, हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहे, वह बड़ी वुसअत वाला है और सब कुछ जानता है, जो लोग अपना माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं फिर न वह अपना एहसान जताते हैं और न ही तकलीफ़ देते हैं, उनके लिए

उनके रब के पास बड़ा सवाब है, और उन्हें क़यामत में न कोई डर होगा न वह ग़मगीन होंगे''।

(सूरः बक़रह आयत नं0 262)

इस आयत में ज़कात देने वालों और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से तीन वादे फ़रमाए गये हैं।

1. यह कि जितना वह ख़र्च करते हैं अल्लाह तआला उनको इसके बदले सैकड़ों गुना ज़्यादा देगा।
2. यह कि उनको आख़िरत में बहुत बड़ा बदला और सवाब मिलेगा और बड़ी बड़ी नेमतें मिलेंगी।
3. यह कि क़यामत के दिन उनको कोई डर और कोई रंज या ग़म न होगा।

भाइयो! सहाब–ए–किराम को अल्लाह तआला के वादों पर पूरा यक़ीन था, इसलिए उनका हाल यह था कि जब अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करने की फ़ज़ीलत व बड़ाई और सवाब की आयतें हुज़ूर सल्ल0 पर उतरीं और उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से उसको सुना तो उनमें जो ग़रीब थे और जिनके पास सदक़ा करने के लिए पैसा भी नहीं था, वह भी सदक़ा करने के इरादे से मज़दूरी करने के लिए घरों से निकल पड़े और अपनी पीठ पर बोझा लाद कर उन्होंने पैसे कमाए और अल्लाह की राह में सदक़ा किया।

(रियाजुस्सालिहीन पेज नं0 28)

ज़कात की अहमियत और फ़ज़ीलत के बारे में हदीस की मशहूर किताब अबूदाऊद शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः– ''तीन बातें हैं जिस व्यक्ति ने उनको अपना लिया उसने ईमान का मज़ा पा लिया, एक यह कि केवल अल्लाह की इबादत करे और दूसरे यह कि ''लाइलाह इल्लल्लाह'' पर उसका सच्चा ईमान और यक़ीन हो और तीसरे यह कि हर साल दिल की पूरी खुशी के साथ अपने माल और अपनी दौलत की ज़कात अदा करे (तो जिसे यह तीन बातें प्राप्त हों जाएं उसको ईमान का असली मज़ा और उसकी चाशनी मिल जाएगी'')।

ज़कात और सदक़े का जो सवाब और जो इनआम अल्लाह तआला की तरफ़ से आख़िरत में मिलेगा उसके अलावा इस दुनिया वाली ज़िन्दगी में भी उसके बड़े फ़ायदे हासिल होते हैं– जैसे यह कि ज़कात और सदक़ा अदा करने वाले मोमिन का दिल खुश और दिल सन्तुष्ट रहता है ग़रीबों को इससे हसद नहीं होता, बल्कि वे उसका भला चाहते हैं उसके लिए दुआएं करते हैं और उसकी ओर मुहब्बत की नज़र से देखते हैं, आम लोगों की नज़र में उसका बड़ा सम्मान होता है, और सब लोगों की सहानुभूति ऐसे व्यक्ति को प्राप्त होती है, अल्लाह तआला उसके धन में बड़ी बरकतें देता है। एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमायाः–

''अल्लाह तआला का आदेश है कि ऐ आदम की औलाद तू मेरे ग़रीब मोहताज बन्दों पर और भलाई के दूसरे अच्छे कामों में मेरा दिया हुआ माल ख़र्च किये जा, मैं तुझको बराबर देता रहूँगा''।

एक दूसरी हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमायाः– ''मैं इस बात पर क़सम खा सकता हूँ कि सदक़ा करने के कारण कोई व्यक्ति ग़रीब और मोहताज न होगा''।

अल्लाह तआला हमको रसूलुल्लाह सल्ल0 के इन इरशादात एवं उपदेशों पर सच्चा और पक्का ईमान और यक़ीन नसीब करे और दिल की ख़ुशी और शौक़ के साथ अमल की तौफ़ीक़ दे।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

बदगुमानीः-

"आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दसियों हदीसें बयान की गई हैं जिन में बदगुमानी से रोका गया है, एक हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अनुवादः "बदगुमानी से बचो! इसलिए कि बदगुमानी सबसे बड़ा झूठ है।"

(अल–बुखारीः 5143)

एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने काबा शरीफ को खिताब कर के फरमायाः तू क्या खूब है, और तेरी खुशबू भी कैसी पाकीजा है, तू कैसा महान है, और तेरी इज़्ज़त कितनी महान है, उस जात की क़सम जिसके क़ब्जे में मुहम्मद की जान है, एक मोमिन की इज़्ज़त तुझ से बढ़ कर है, उसका ख़ून और उसका माल, और ये कि उसके बारे में अच्छा ही गुमान किया जाए।

(इब्ने माजाः 4068)

अगर किसी के बारे में बुरे खयालात पैदा हों और बदगुमानी की सूरत पैदा हो जाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका इलाज भी एक हदीस में बयान कर दिया है– फरमाते हैं– "तीन चीज़ें मेरी उम्मत का पीछा नहीं छोड़ सकतीं, फाल, हसद और बदगुमानी" सवाल किया गया कि इनके बुरे नतीजों से कैसे हिफाजत मुमकिन है? आप ने फरमायाः– "अगर हसद पैदा हो जाए तो अल्लाह से इस्तिग्फार करो, अगर बदगुमानी पैदा हो तो अमल उसके मुताबिक न करो (और उसको जेहन से निकाल दो) अगर फाल हो तो भी बुरे फाल की वजह से अमल मत छड़ो।"

(जामेउल अहादीस अल्लामा सुयूतीः 45013)

किसी के बारे में सिर्फ खयालात के आ जाने से पकड़ नहीं होगी, एक हदीस में आता है–

अनुवादः– "अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत के वस्वसों को माफ कर दिया जब तक वो वस्वसों की हद तक रहें और उनको दूर किया जाता रहे।"

(अल–बुखारीः 2528)

अगर उस पर अमल शुरू हो गया और बात की जाने लागी और जेहन में वो चीज़ बैठने लगी तो उस पर पकड़ होगी, इसी लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसका इलाज ये बताया है कि अगर बुरे गुमान पैदा होने लगें तो उनको बाकी न रखा जाए। ये मर्ज आमतौर पर हम मुसलामानों में पैदा हो गया है, कि दूसरों कि कमियों पर नजर रहती है और जरा सी बात भी बड़ी नजर आती है, ये कहावत पूरी तरह हम पर सही साबित होती है कि अपनी आँख की शहतीर नजर नहीं आती और दूसरों कि निगाहों के तिनके नज़र आ जाते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने किसी का जिक्र आया तो कुछ लोगों ने जो उनको जानते थे उनके बारे में कहने लगे कि वो बड़े गुनाहों में लिप्त हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "उसको अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत है।

(अल–बुखारीः 6780)

बड़े गुनाहों के पाए जाने के बावजूद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी एक नेकी का जिक्र किया और ये सबक दे दिया कि मजलिसों में अगर इस तरह किसी का जिक्र आये तो जिक्र–ए–खैर ही बेहतर है, कभी कभी एक नेकी अल्लाह के दरबार में ऐसी कुबूल हो जाती है कि बड़े बड़े गुनाहों पर पर्दा डाल दिया

जाता है, बदगुमानी करने वाले के ऊपर आमतौर पर अपनी बड़ाई का एहसास भी पैदा होने लगता है और ये चीज अल्लाह को सबसे ज़्यादा ना पसन्द है, मसला सिर्फ बदगुमानी का नहीं बल्कि अगर किसी के अन्दर खराबी मौजूद हो और उसको मना करना है तो भी अगर ऐसा कोई तरीका अपनाया जाता है जिसमें अपनी बड़ाई का इज़हार होता हो, तो अल्लाह की जात बहुत बेनियाज़ है, मामला बिलकुल उलट सकता है, एक हदीस में दो दोस्तों का वाकिया बयान हुआ है, उन में से एक तकवे वाला परहेजगार था, दूसरा बुराइयों में लिप्त हो जाया करता था, उसका नेक दोस्त उसको समझाता रहता था, मगर उस से बुराइयां छूटती नहीं थीं, एक दिन गुस्से में आकर उसका नेक दोस्त कहने लगा तू जन्नत में कभी नहीं जा सकता, तेरा ठिकाना तो जहन्नम ही है, अल्लाह तआला को ये बात पसंद नहीं आई और अल्लाह तआला ने उससे कहा कि तू कौन होता है उसको जन्नत से रोकने वाला, मैं तुझे जहन्नम में भेज दूंगा और उसको जन्नत में दाखिल करूँगा।

(अल–बैहकीः 6413)

इस वाकिये में एक तरफ अपनी बड़ाई का एहसास है, और दूसरी तरफ सामने वाले को हकीर समझा जा रहा है, इस पर इतनी सख्त पकड़ हो गई, अगर सिर्फ बदगुमानी की बिना पर किसी को ज़लील और कमतर समझा गया और अपने कौल–फेल से इसका इज़हार भी किया गया तो कैसे सख़्त गुनाह की बात है, और फिर जब इस के बदतरीन नतीजे समाज के सामने आएँगे तो समाज कैसा करप्ट होता चला जाएगा ये हर समीक्षा करने वाला समझ सकता है। ये बात भी खास लिहाज करने की है कि सबसे पहले तो कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिए कि दूसरों को बदगुमानी का मौका मिले, हदीस में आता है कि–

अनुवादः "आरोप की जगहों से बचो" ये बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसलिए फरमाई कि किसी को बदगुमानी का मौका न मिले, दूसरी बात ये कि अगर कोई ऐसी हालत में है कि दूसरा बदगुमान हो सकता है तो उसे चाहिए कि वो उस बदगुमानी को दूर कर दे ताकि वो फितने में न पड़ जाए, इसकी मिसाल खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेश फरमाईः एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एतिकाफ में थे, रात को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियों में से कोई मिलने आयीं, वापसी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनको छोड़ने के लिए चले, इत्तिफ़ाक़ से दो अंसारी अचानक पहुँच गए, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस हाल में देख कर तेजी से वापस पलटने लगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको आवाज़ दे कर बुलाया और फरमाया कि ये मेरी बीवी हैं, उन्होंने अर्ज किया– अल्लाह के रसूल! क्या मैं आपके साथ बदगुमानी कर सकता हूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि शैतान इंसान की रगों में खून की तरह दौड़ता है।

(सहीह मुस्लिमः 5807)

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़ास्त

जामा मस्जिद निगोहां के सेक्रेटरी जनाब आरिफ अली साहब (बैरी सालपुर) की पत्नी का 5 मार्च 2025 को इंतेकाल हो गया। ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन''।

मरहूमा बड़ी नेक नमाज़ रोजे की पाबंद और दीनदार खातून थीं मरहूमा के परिजनों में आरिफ अली साहब के अलावा दो बेटियां और एक बेटा और भरा–पूरा परिवार है अल्लाह सबको सब्र अता फरमाए।

हम अपने समस्त पाठकों से मरहूमा के लिए दुआ–ए–मग़फ़िरत की दरखास्त करते हैं। (इदारा) ◆◆

सात चीज़ों से पहले अच्छे आमाल कर लो

हज़रत मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सात चीजों के आने से पहले जल्द अज़ जल्द अच्छे आमाल कर लो क्या तुम (नेक आमाल करने के लिए) ऐसे फक्र (मोहताज़ी) का इन्तिज़ार कर रहे हो जो भुला देने वाला हो? या तुम ऐसी मालदारी का इन्तिजार कर रहे हो जो इंसान को सरकश बना दे? या ऐसी बीमारी का इन्तिजार कर रहे हो जो तुम्हारी सेहत को खराब कर दे? या तुम सठया देने वाले बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो? या तुम उस मौत का इन्तिज़ार कर रहे हो जो अचानक आ जाए? क्या तुम दज्जाल का इन्तिजार कर रहे हो, दज्जाल बदतरीन चीज़ है जिस का इन्तिजार किया जाए, या फिर क़यामत का इन्तिजार कर रहे हो? क़यामत तो बड़ी आफत और तल्ख है।

तशरीहः— यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है, इस में ''मुबादरत इलल खैरात'' यानी नेक कामों की तरफ़ जल्दी से फिक्र करने के बारे में फरमाया गया है, चुनांचे फरमाते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया सात चीजों के आने से पहले जल्द अज़ जल्द अच्छे आमाल कर लो जिस के बाद अच्छा अमल करने का मौका न मिलेगा, और फिर उन सात चीजों को एक दूसरे अन्दाज़ से बयान फरमाया।

क्या फक्र का इन्तिजार है?:—

क्या तुम नेक आमाल करने के लिए ऐसे फक्र व फाक़े का इन्तिजार कर रहे हो जो भुला देने वाला हो? जिसका मतलब यह है कि अगर इस वक़्त तुम्हें खुशहाली हासिल है, रूपया पैसा पास है खाने पीने की तंगी नहीं है और ऐश व आराम से जिन्दगी बसर हो रही है, इन हालात में अगर तुम नेक आमाल को टाल रहे हो तो क्या तुम उस बात का इन्तिज़ार कर रहे हो कि जब मौजूदा खुशहाली दूर हो जाएगी और खुदा न करे फ़क्र व फाक़ा आ जाएगा, और उस फक्र व फाक़े के नतीजे में तुम और चीज़ों को भूल जाओगे, क्या उस वक़्त नेक आमाल करोगे? तुम्हारा ख़्याल यह है कि इस खुशहाली के ज़माने में तो ऐश हैं और मज़े हैं, और फिर जब दूसरा वक़्त आएगा, उसमें नेक अमल करेंगे, तो उस के जवाब में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि जब माली तंगी आ जाएगी तो उस वक़्त नेक आमाल से और दूर हो जाने का अन्देशा है उस वक़्त इन्सान इतना परेशान होता है कि जरूरी काम भी भूल जाता है, इसके पहले कि वह वक़्त आए कि तुम्हे माली परेशानी लाहिक हो, आर्थिक तौर पर तंगी का सामना हो, उससे पहले पहले जो कुछ खुशहाली हासिल है उस को ग़नीमत समझ कर उस को नेक अमल में सर्फ करो। आगे फरमाया—

क्या मालदारी का इन्तिज़ार है?:—

या तुम ऐसी मालदारी का इन्तिज़ार कर रहे हो जो इन्सान को सरकश बना दे? यानी अगरचे इस वक़्त बहुत ज़्यादा मालदार नहीं हो और ख्याल कर रहे हो कि अभी जरा माली तंगी है या यह कि माली तंगी तो नहीं है लेकिन दिल यह चाह रहा है कि और पैसे आजाएं, और दौलत मिल जाए तब नेक आमाल करेंगे, याद रखो! अगर मालदारी ज़्यादा होगी, और पैसे

बहुत ज़्यादा आ गए और दौलत के अंबार जमा हो गए तो उसके नतीजे में अन्देशा यह है कि कहीं ऐसा न हो कि वह माल व दौलत तुम्हें और ज़्यादा सरकशी में मुबतला कर दे, इस लिए कि इन्सान के पास जब माल ज़्यादा हो जाता है और ऐश व आराम ज़्यादा मुयस्सर आ जाता है तो वह खुदा को भुला बैठता है, लिहाज़ा जो कुछ करना है अभी कर लो।

क्या बीमारी का इन्तिज़ार है?

या ऐसी बीमारी का इन्तिज़ार कर रहे हो, जो तुम्हारी सेहत को खराब कर दे? यानी इस वक़्त तो सेहत है तबीअ़त ठीक है जिस्म में ताक़त और कूवत मौजूद है, अगर इस वक़्त कोई अमल करना चाहोगे तो आसानी के साथ कर सकोगे, तुम क्या नेक अमल को इसलिए टाल रहे हो कि यह सेहत रुख़्सत हो जाए और खुदा न करे जब बीमारी आजाएगी, फिर नेक अमल करोगे? अरे जब सेहत की हालत में नेक अमल नहीं कर पाये तो बीमारी की हालत में क्या करोगे? और फिर बीमारी खुदा जाने कैसी आ जाए और किस वक़्त आ जाए, तो इसके पहले कि वह बीमारी आये नेक अमल कर लो।

क्या बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो?:–

या तुम सठया देने वाले बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो? अभी तो हम जवान हैं, अभी तो हमारी उम्र ही क्या है, अभी दुन्या में देखा ही क्या है, इस जवानी के ज़माने को ऐश और लज्जतों के साथ गुजर जाने दो, फिर नेक अमल कर लेंगे, तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि क्या तुम बुढ़ापे का इन्तिज़ार कर रहे हो? हालांकि बाज़ अवक़ात बुढ़ापे में इन्सान के हवास खराब हो जाते हैं और अगर कोई काम करना भी चाहे तो नहीं कर पाता, तो इसके पहले कि बुढ़ापे का दौर आए, इससे पहले इस ज़माने में नेक अमल कर लो, बुढ़ापे में तो यह हालत होती है कि मुंह में दांत और न पेट में आंत और जब गुनाह करने की ताक़त ही न रही, उस वक़्त अगर गुनाह से बच भी गए तो क्या कमाल कर लिया? जब जवानी हो ताक़त मौजूद हो, गुनाह करने के सामान मौजूद हों, गुनाह करने के अस्बाब मौजूद हों, गुनाह करने का जज्बा दिल में मौजूद हो उस वक़्त अगर इन्सान गुनाह से बच जाए तो दर हक़ीक़त यह पैगम्बराना तरीक़ा है, चुनांचे इसी के बारे में शेख सादी फरमाते हैं कि–

''अरे बुढ़ापे में तो जालिम भेड़िया भी परहेजगार बन जाता है, वह इस लिए परहेजगार नहीं बना कि उसको किसी अख़्लाक़ी फलसफे ने परहेजगार बना दिया, या उसके दिल में खुदा का खौफ आ गया बल्कि इसलिए परहेजगार बन गया कि अब शिकार कर ही नहीं सकता, किसी को चीड़ फाड़ कर खा नहीं सकता, अब वह ताक़त ही बाकी नहीं रही, इस लिए एक गोशे में अन्दर परहेजगार बना बैठा है बल्कि जवानी के अन्दर तौबा करना, यह है पैगम्बरों का तरीक़ा, यह है पैगम्बरों का मामूल, हज़रत यूसुफ अलै0 को देखिए कि भरपूर जवानी है, ताक़त है, कूवत है, हालात मयस्सर हैं और गुनाह की दावत दी जा रही है, लेकिन उस वक़्त जबान पर कल्मा आता है, ''मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ'' यह है पैगम्बरों का तरीक़ा कि इन्सान जवानी के अन्दर गुनाह से ताइब हो जाए जवानी के अन्दर इन्सान नेक अमल करे, बुढ़ापे में तो और कोई काम बन नहीं पड़ता, हाथ पांव चलाने की सकत ही नहीं, अब गुनाह क्या करे? गुनाह के मौक़े ही ख़त्म हो गए इस लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि जब बूढ़े हो जाएंगे तब नेक अमल करेंगे,

शेष पृष्ठ ..27...पर

शरीअ़ते इस्लामी की अहमियत और उसका मुक़ाम

हज़रत मौ0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

शरीअ़ते इस्लामी की पाबन्दीः–

मुसलमानों को अपने दीन पर अमल करना और अपने पारिवारिक मुआ़मलात को शरीअते इस्लामी के अहकाम के मुताबिक़ अन्जाम देना कितना ज़रूरी है इसको कुर्आन शरीफ और हदीस शरीफ की तालीमात से बखूबी समझा जा सकता है, मुसलमानों की शरीअ़त उनकी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं में रहनुमाई करती है, उनकी जिन्दगी की मुश्किलात का हल बताती है, उन ज़रूरतों का हल बताने वाली शरीअ़त की नाफरमानी करना न सिर्फ यह कि बड़ी महरूमी की बल्कि खुदा को सख़्त नाराज़ करने वाली बात है, इससे मुसलमानों को अपने परवरदिगार की मदद व रहमत से न यह कि महरूमी मिलती है बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ से सख़्त पकड़ होने का अन्देशा हो जाता है, अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुर्आन शरीफ में साफ साफ फरमा दिया है कि उसको अपनी तरफ से अता की गई दीन व शरीअ़त की खिलाफ वरज़ी बिलकुल कुबूल नहीं, फरमायाः– *"और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा वह उससे हरगिज़ कुबूल नहीं किया जायेगा और ऐसा शख्स आखिरत में नुक़सान उठाने वालों में होगा"*

(सूरः आले इमरानः 85)

"क्या यह ज़माने जाहिलीयत के हुक्म के ख़्वाहिशमन्द हैं? और जो अल्लाह की बातों पर यक़ीन रखते हैं उनके लिए अल्लाह के हुक्म से अच्छा हुक्म किस का है?"

(सूरः अल माइदाः 50)

अल्लाह तआला ने अपना यह दीन और शरीअ़त अपने आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरीये मुसलमानों को अता किया और अपने आखिरी नबी के अहकामात और फैसलों को मानना जरूरी क़रार दिया और यह फरमाया कि उसके माने बगैर कोई मुसलमान मुसलमान नहीं रहता, फरमाया–

"आपके रब की क़सम! यह लोग जब तक अपने झगड़ों में आपको फैसला करने वाला न बनायें और फैसला आप कर दें तो उससे अपने दिल में तंगी न पायें बल्कि उसको खुशी से मान लें तब तक मोमिन नहीं होंगे"

(सूरः निसाः 65)

लेकिन सख़्त अफसोस की बात है कि मुसलमानों में अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने से बड़ी बे तवज्जुही पैदा हो गयी है, उसके अहकामात की तामील के बजाये दूसरों के रस्मो रिवाज पर अमल किया जाने लगा है जो कि एक तरफ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाफरमानी और उनकी नाराज़गी का सबब है, दूसरी तरफ मुसलमानों का बहैसियत मुसलमान साबित होना मुश्किल हो गया है, वह अपने दीने फितरत इस्लाम के तौर तरीक़े के इख़्तियार करने के बजाये जाहिलाना व मुशरिकाना और बेजा तौर व तरीक़े को इख़्तियार करने वाले और ग़ैरों की रस्मों को अपनी आदत बनाने वाले बनते जा रहे हैं।

ऐसी सूरते हाल कुछ तो ग़फलत और नफ्स परस्ती के

सबब हुई है और कुछ अपनी शरीअ़त से नावाक़िफ़ियत की बिना पर हुई है, ग़फ़लत और नफ़्स परस्ती को दूर करने के लिए उपदेशों और नसीहतों की ज़रूरत है और नावाक़िफ़ियत का इलाज उनको शरीअ़त के ज़रूरी अहकाम से वाक़िफ़ कराने से किया जा सकता है।

इसके लिए इस मुल्क में जहाँ का संविधान सेकुलरिज़्म पर आधारित है और मुसलमान अक़ल्लियत में भी हैं, हुकूमत से कोई खास उम्मीद नहीं की जा सकती है, उसको तो मिल्लते इस्लामी के सपूत ही अन्जाम दे सकते हैं, क्योंकि अपनी मिल्लत को महफ़ूज़ रखने की ज़िम्मेदारी सबसे ज़्यादा उन्हीं की है, शरीअ़ते इस्लामी के सिलसिले के मुआ़मलात का मुल्क के अदालती व दस्तूर साज़ी के इदारों से जो तअल्लुक़ है उसके लिए अलहम्दुलिल्लाह हुकूमत के सामने अपना बचाव करने और ग़लतफहमियाँ दूर करने की जिद्दोजहद मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के ज़िम्मेदारों ने अन्जाम दी है और शरीअते इस्लामी को नुक़सान पहुंचाने वाले बाज़ जाब्तों को बदलवाया और इस दायरे में जब कोई नई पेचीदगी होती है, बोर्ड उसकी फिक्र करता है और उसके लिए हर मुम्किन कोशिश करता है, इसी तरह इस मोर्चे पर अलहम्दुलिल्लाह ज़रूरत के मुताबिक़ काम अंजाम पा रहा है।

दूसरा मोर्चा खुद मुसलामनों को शरीअ़ते इस्लामी पर अमल करने के दायरे में लाने का है जो सबसे व्यापक और अहम है, इसके लिए बोर्ड ने दीगर मिल्ली इदारों की मदद से इस्लाहे मुआ़शरा के उनवान से काम किया है, यह काम ज़्यादा व्यापक और अनथक मेहनत का काम है, ज़रूरत है कि इसके लिए जगह जगह इजतिमाआ़त किये जायें, आम मुसलमानों को शरीअ़ते इस्लामी के अहकाम की खिलाफ वर्जी से रोका जाए, उनके मुआ़मलात में गैरों की रस्में और तरीक़े दाखिल हो गये हैं, जिनसे परवरदिगार की मरज़ी और उसके आखरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात की खिलाफवर्जी हो रही है, उससे बाज़ रहने की तलक़ीन की जाए ताकि दुन्या व आखिरत दोनों में जो नुक़सान व तबाही का खतरा है वह दूर हो।

इसराफ व नुमाइशः–

निकाह और शादी में ग़ैर ज़रूरी नुमाइश व फुजूलख़र्ची और जाहिलाना रस्में व ग़ैर आक़िलाना तरीक़े हैं जिनसे एक तरफ तो खुदा और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाराज किया जा रहा है और दूसरी तरफ वह क़ीमती सरमाया जो खुद पति–पत्नी के मुस्तक़बिल की तामीर और मिल्लत के ज़रूरी कामों में लगाया जा सकता है, ज़ाये व बेकार होता है, और इसी के साथ उसका ख़र्च करना लड़की लड़के के वालिदैन के लिए बार का बाइस भी बनता है, ज़रूरत है कि उसकी इस्लाह के लिए लोगों को समझाया जाये कि वह महज वक़्ती लुत्फ और नामो नमूद के लिए इस तरीक़े से अपनी आर्थिक स्थिति को भी नुक़सान पहुंचाते हैं और मिल्लत के ज़रूरी तक़ाजों को पूरा करने में जो हिस्सा लिया जा सकता है, उसमें भी असमर्थ रहते हैं फिर अपने रब और उसके आखिरी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहकाम की खिलाफ वर्ज़ी करके उनको नाराज़ करते हैं, यह नाराज़गी उनके लिए दुन्या व आख़िरत दोनों में नुक़सान का बाइस बनती है।

महर की अहमीयतः–

इस्लामी शरीअत में शादी के लिए महर मुक़र्रर करना और उसका अदा करना या अदा

करने की सच्ची नीयत रखना लाज़मी है, महर को देने के लिए रखा जाता है, इसलिए उसको न इतना ज़्यादा होना चाहिए कि उसकी अदायगी शौहर की हैसियत से बाहर हो और न इतना कम होना चाहिए कि बीवी की हैसियत को गिराता हो।

महर की तादाद व मात्रा के लिए सबसे अच्छा नमूना हमारे आक़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महबूब साहिबज़ादी हज़रत फातिमा रज़ि0 का है, जिनका महर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पांच सौ दिरहम यानी एक सौ एकतीस तोला तीन माशा चांदी की क़ीमत का मुक़र्रर फरमाया था, इस्लाम में शादी इस तरह बताई गई कि वह बग़ैर कर्ज दार हुए सहूलत से हो सकती है, शादी सादा होनी चाहिए।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाज सहाबियों ने इस तरह भी शादी की कि उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी जिन पर वह दिलो जान से फिदा थे, शिर्कत की दावत देना ज़रूरी नहीं समझा, और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर किसी नागवारी का इज़हार भी नहीं फरमाया, खबर मिलने पर सिर्फ यह फरमाया कि ''वलीमा करो ख्वाह एक बकरी का ही हो''।

इस्लाम में बीवी पर जहेज़ लाना जरूरी नहीं क्योंकि शादी के बाद उसकी ज़रूरत के सारे खर्चे शौहर पर होते हैं, बीवी को उसके लिए कुछ नहीं करना होता बल्कि रिहाइश के लिए भी शौहर की तरफ़ से घर का इन्तिजाम करना होता है और उस पर सिर्फ अपने ज़ाती घर की ज़िम्मेदारी डालना है, पूरे ख़ानदान की जिम्मेदारी उस पर नहीं डालना है।

अफ़सोस यह है कि मुसलमान जहां दीन की दूसरी बहुत सी बातों में अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्मों को छोड़ता है, शादी में भी छोड़ता है, हिन्दुस्तान में गैर मुस्लिमों की तरह बीवी से जहेज़ के तलबगार होते हैं और यही नहीं बल्कि उसके सिलसिले में ज़ालिमाना रवय्या इख़्तियार करते हैं और उसके उलटे महर की अदायगी की कोई फिक्र नहीं करते या उसकी अदायगी की नीयत नहीं रखते, क्योंकि वह ऐसा महर मुक़र्रर करते हैं कि उसकी अदायगी उन के बस में होती ही नहीं, उसके उलटे बीवी पर माली बोझ डालते रहते हैं, यह सब ख़िलाफ़े शरीअ़त है।

वैवाहिक ज़िन्दगीः-

निकाह और शादी के मुआ़मलात में शरीअ़ते इस्लामी की तय मान्यताओं और तरीक़े की पाबन्दी न करने से पति–पत्नी के बीच तअ़ल्लुक़ात बाज़ वक़्त सख़्त पेचीदा हो जाते हैं कि तल्ख़ी और ज़ालिमाना तरीक़े से अ़लाहिदगी, दुश्मनी और जान की हलाक़त तक नौबत आ पहुंचती है, लेकिन यह भी सही है कि ज़ौजैन के दरमियान बाज़ वक़्त सहीह तरीक़ाकार इख़्तियार करने के बावजूद अलाहिदगी की ज़रूरत पेश आ जाती है, उसके लिए शरीअ़त ने तलाक़ का जरीआ़ मुहैया किया है, लेकिन उसका मुनासिब तरीक़ा बताया है, वह यह कि पहले अहले तअ़ल्लुक़ की तरफ से मेल मिलाप कराने की कोशिश की जाये और कामयाबी न होने पर एक एक करके तीन महीने में तीन तलाक़ें दी जायें, और ज़रूरत पर एक मरतबा ही तलाक़ दे कर अलाहिदगी की जा सकती है, मुकम्मल अलाहिदगी तय कर लेने पर ''खूबी व हमदर्दी'' के तरीक़े से रुख़सत करने की तलक़ीन की गयी है और दिलदारी की शक़्ल बताई गयी है, बहुत से मुसलमान

शेष पृष्ठ.....21...पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

प्यार और स्नेहः-

राजा भगवान दास उन्नति करके पंज हजारी पंज हज़ार सवारों पर मनसबदार बन गया था। वह अन्तिम समय तक अकबर के प्यार और नीयत की शुद्धता के जाल का कैदी रहा। अकबर के 23 जुलूस में पंजाब का सूबेदार और सेनापति नियुक्त हुआ। इसी के बाद राजकुमार सलीम का विवाह उसकी बेटी से हुआ जिसको शाह बेगम की उपाधि दी गयी। इसी से खुसरो पैदा हुआ। 994 हि0 में वह काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ, 995 हि० में हरम सरा और महलों की व्यवस्था उसके सुपुर्द हुई। 997 हि० में लाहौर की निगरानी के लिए नियुक्त हुआ। अकबर के साथ मेवाड़ के राणा के विरुद्ध भी युद्ध में सम्मिलित हुआ। बड़े–बड़े अभियानों में राजा भगवानदास अकबर के साथ अवश्य रहता। 976 हि० अर्थात 1571 ई0 में अकबर गुजरात के अभियान पर गया तो राजा भगवानदास और राजा मानसिंह भी उसके साथ थे। युद्ध के अवसर पर अकबर अपने विशेष घोड़े नूर बैजा पर सवार होकर युद्ध के मैदान में जाने लगा तो घोड़ा अचानक बैठ गया। सब एक–दूसरे का मुँह देखने लगे कि शगुन अच्छा नहीं हुआ लेकिन राजा भगवानदास ने समझदारी से काम लिया और आगे बढ़ कर अकबर को सम्बोधित करके बोलाः ''विजय मुबारक हो'' अकबर ने सुनकर कहा, ''ऐसा ही हो, लेकिन तुम कैसे समझे?'' राजा ने उत्तर दिया कि हमारे शास्त्र में लिखा है कि जब सेना युद्ध के लिए तैयार हो और सेनापति का घोड़ा सवारी के समय बैठ जाए तो विजय उसी की होती है। यह सुनकर सभी सैनिकों में खुशी की लहर दौड़ गयी। जब युद्ध आरम्भ हुआ तो अकबर ने, जो राजा भगवानदास के साथ एक टीले पर खड़ा हो कर युद्ध का निरीक्षण कर रहा था, राजा भगवानदास को सम्बोधित कर के कहा कि अगले दस्ते पर दबाव अधिक है और असन्तुलित हुआ जाता है, चलो हम तुम मिलकर जा पड़ें, यह कहकर दोनों ने घोड़ों की लगाम उठायी और उनका यह धावा सफल रहा।

इसी युद्ध में अकबर एक जगह पर खड़ा हो कर दुश्मनों पर तीर चला रहा था। राजा भगवानदास और मानसिंह उसके पास थे। अचानक दुश्मन के तीन सैनिक आगे बढ़े। एक राजा भगवानदास की ओर लपका और दो अकबर पर हमलावर हुए। राजा भगवानदास ने तो दुश्मन को मार भगाया, अकबर दो दुश्मन सैनिकों से लड़ने लगा तो मानसिंह अकबर की मदद के लिए पहुंचा ही जाता था कि अकबर ने ललकारा कि वह अपनी जगह से आगे न बढ़े और खुद अपना घोड़ा उड़ा कर दोनों दुश्मनों को अपने घेरे में लेना चाहा। राजा भगवानदास ने चिल्लाकर मानसिंह से कहा कि खड़े हुए क्या देखते हो आगे बढ़ो, मानसिंह ने कहाः महाबली क्रोधित होते हैं। राजा भगवानदास ने झल्लाकर कहाः ''यह समय

गुस्सा देखने का नहीं है'' इस दौरान अकबर ने दोनों दुश्मनों को मार भगाया। ज़खीरतुल ख़वानीन, खण्ड 1, पृ० 103 में है कि भगवान दास के सत्कर्मों में लाहौर की जामा मस्जिद है जिसमें अक्सर लोग इस समय तक जुमे की नमाज़ अदा करते हैं।

राजपूतों के प्रति सहानुभूतिः–

इसी लड़ाई में जब अकबर अपनी फौज की पंक्तियाँ सीधी कर रहा था तो देखा कि राजा बहादुरमल का भतीजा राजा जयमल कुशवाहा एक भारी बख्तर पहने हुए है। अकबर ने वह बख्तर उतरवा लिया और अपनी विशेष कवच पहना दी। राजा जयमल इस विशेष रियायत से बहुत खुश हुआ, थोड़ी देर के बाद अकबर ने जोधपुर के राजा मालदेव के पोते राजा करन को देखा कि उसके पास न कवच है न बख़्तर, उसने राजा जयमल का बख्तर उसको पहना दिया। राजा जयमल का पिता रुपसी भी लड़ाई में सम्मिलित था। उसको यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि राजा करन के परिवार से उसकी पुश्तैनी दुश्मनी चली आ रही थी, उसने अकबर को सन्देश भेजा कि वह बख़्तर मेरे पूर्वजों की यादगार है और बहुत मुबारक है इसलिए मुझको वापस कर दी जाए। अकबर मामले की तह को पहुँच गया, रुपसी के पास सन्देश भेजा कि खासा का कवच और भी मुबारक है लेकिन राजा रुपसी का क्रोध ठण्डा नहीं हुआ, उसने उग्र हो कर युद्ध का हथियार उतार कर फेंक दिया और कहा कि युद्ध के मैदान में ऐसे ही जाऊँगा। अकबर को यह मालूम हुआ तो उसने भी अपना कवच उतारने का इरादा कर लिया कि जब मेरे सैनिक बिना कवच लड़ेंगे तो में कैसे कवच में छुप कर युद्ध के मैदान में जा सकता हूँ, राजा भगवानदास को इसकी खबर मिली तो तुरन्त घोड़ा बढ़ा कर जयमल और रुपसी के पास पहुँचा, दोनों को समझाकर और हथियार लगवाकर अकबर के पास लाया और कहा कि रुपसी ने आज भाँग अधिक पी ली थी, उसकी लहर की तरंग में था। यह सुनकर अकबर का संकोच जाता रहा।

राजपूतों की उल्लेखनीय बहादुरीः–

एक अवसर पर अक़बर की सभा में हिन्दुस्तान के लोगों की मर्दानगी और बहादुरी का उल्लेख हुआ, राजपूतों ने बढ़–चढ़ कर कहा कि यदि दो राजपूत एक दूसरे के सामने बरछे लेकर दौड़ पड़ें तो वह दोनों बरछे का सीने में उतर जाना पसन्द कर लेंगे लेकिन कतराना पसन्द नहीं करेंगे, यह सुनकर अकबर की मर्दानगी जोश में आयी। उसने आदेश दिया कि उसकी तलवार एक दीवार में इस तरह गाड़ दी जाए कि उसका फल बाहर निकला रहे, जब उसके आदेश पर अमल हो गया तो वह आगे बढ़कर तलवार की नोक अपने सीने में उतार लेना ही चाहता था कि राजा भगवानदास के लड़के राजा मान सिंह ने दौड़ कर दीवार से तलवार को निकाल कर दूर फेंक दिया, अकबर झुंझलाया, मानसिंह को जमीन पर गिरा दिया, दोनों की इस कुश्ती में अकबर के अंगूठे में घाव हो गया। अकबर का एक दूसरा दरबारी अमीर मुजफ़्फ़र खाँ सुल्तान ने यह देखा तो उसने अकबर के घायल हाथ मरोड़ कर मानसिंह को उससे छुड़ा लिया।

राजपूतों की उल्लेखनीय वफादारीः–

राजा मानसिंह से अकबर को बहुत लगाव रहा। उससे अत्यन्त प्रेम में राजा मिर्जा कहा करता था। राजा मानसिंह को

भी अकबर से बहुत लगाव रहा, वह युद्ध के मैदान में अकबर के घोड़े की लगाम से अपनी लगाम मिलाये रखता, वह अकबर के लिए राणा प्रताप से भी बहुत बहादुरी से लड़ा।

राजपूतों पर सम्पूर्ण भरोसाः–

बिहार में पूरनमल और राजा संग्राम और उड़ीसा में मैनपुरी के राजा के विरुद्ध राजा मानसिंह ही के नेतृत्व में सेना भेजी गयी। उसने काबुल और जाब्लिस्तान में जाकर अकबरी शौर्य का झण्डा लहराया। अकबर ने अपने दरबारी सरदारों में सबसे पहले उसी को सात हजारी मनसबदार बनाया जो उस जमाने का सबसे बड़ा प्रतिष्ठित पद था। राजा मानसिंह से पहले कभी कोई सेना किसी हिन्दू सैनिक सरदार की नेतृत्व में कहीं नहीं भेजी गयी थी और न किसी हिन्दू सेनापति ने मुसलमानों के विरुद्ध अपने नेतृत्व में हमला किया था। लेकिन अकबर ने मानसिंह को अपने सर–आँखों पर बिठा कर मुसलमानों का सारा रौब हिन्दुओं के दिलों से निकाल दिया।

धार्मिक लगावः–

राजा मानसिंह भी अकबर के प्यार का बदला अपनी सरफरोशी और जाँबाजी का जौहर दिखा कर अदा करता रहा। लेकिन धर्म के मामले में अकबर के सामने झुकना पसन्द नहीं किया। एक वर्ष मुहर्रम के महीने के आशूरा की रात थी, अकबर अपने शयनागार में अब्दुल रहीम खानखाना और राजा मानसिंह के साथ बैठा था। उस जमाने में वह दीन–ए इलाही का झण्डा बरदार बन चुका था। लेकिन मानसिंह ने उस धर्म को स्वीकार करना पसंद नहीं किया था। अकेले में अवसर पाकर अकबर ने उसको दीन–ए–इलाही की प्रेरणा दिलायी लेकिन वह शुभचिन्तक और कृतज्ञता की मूर्ति निःसंकोच होकर बोल उठा कि यदि इस मुरीदी से तात्पर्य जाँबाजी है तो मैं तो हर अवसर पर अपनी जान हथेली पर लिए उपस्थित रहा हूँ फिर परीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं, इसके अतिरिक्त कुछ और मंशा है तो इसका सम्बन्ध धर्म से है, मैं हिन्दू हूँ। यदि आप कहें तो मुसलमान हो जाऊँ। इन दोनों रास्तों के अतिरिक्त किसी और रास्ते पर चलना नहीं चाहता हूँ। यह सुनकर अकबर खामोश हो गया।

❖❖❖

पृष्ठ ..18...का शेष

इन हिदायात को नज़रअन्दाज़े करके ख़राब सूरतेहाल पैदा कर देते हैं। इसी तरह तक़सीम मीरास का मुआमला है, रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक का मसला है, और दीगर पारिवारिक मुआमलात हैं।

फिर एक अहम बात शराब और जुवे की बुरी आदतें हैं, शराब और जुवे को शीरअत ने हराम और क़ाबिले मज़म्मत बताया है, उससे माल व पारिवारिक ज़िन्दगी की तबाही होती है और सबसे बड़ी बात यह है कि खुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सख़्त नाराज़गी का बाइस बनता है।

इसी तरह की ग़लत चीज़ें मुसलमान मिल्लत की ज़िन्दगी को घुन की तरह लगती जा रही हैं और ज़िन्दगियां तबाह कर रही हैं, हमारे दाअी हज़रात और जिनको खुदा ने जुबान या क़लम की मुअस्सिर सलाहियतें अता की हैं उनका फर्ज़ है कि वह आगे आयें और मुख़तलिफ़ तरीकों से मुस्लिम मुआशरे व समाज की इन ख़राबियों को दूर करने की कोशिश करें।

❖❖❖

आटोफिजी

इं0 जावेद इक़बाल

आटोफिजी एक यूनानी शब्द है, आटो के मानी ख़ुद ब ख़ुद और फिजी के मानी खा लेना। इस का ताल्लुक इंसानी जिस्म के अंदर पाचन क्रिया से है। मेडिकल साइंस के क्षेत्र में नित नई मालूमात का इनकिशाफ तहकीकात के नतीजे में इंसानी जेहन पर जैसे जैसे हो रहा है वैसे वैसे वैज्ञानिक हैरान हैं कि मानव शरीर की रचना कितनी आश्चर्य चकित कर देने वाले पेचीदा तकनीकी उसूलों पर आधारित है। चौदह सौ साल पहले जब कुरआन का पैगाम उतर रहा था, उस जमाने में इंसान को अपने जिस्म के भीतर के रहस्यों का कोई विशेष ज्ञान नहीं था। अल्लाह तआला ने उस समय इंसानों को यह पैगाम पहुंचा दिया था कि ''निकट भविष्य में हम उन्हें अंतरिक्ष में अपनी निशानियां दिखायेंगे और ख़ुद उनके शरीर में भी, इतना खोल कर (स्पष्ट) कि वह जान लेंगे कि वास्तविकता तो यही है''। (41:53)

दुनिया में जैसे जैसे वैज्ञानिक शोध कार्य बढ़ रहे हैं, नित नये रिसर्च हो रहे हैं उतने ही कायनात के रहस्यों के साथ इंसानी जिस्म के राज़ों पर से पर्दा उठ रहा है। इंसान इन रहस्यों की खोज को अपनी अक़्ल का कमाल समझता है मगर गौर करने का मक़ाम है कि कुरआन पाक में अल्लाह तआला यह भी फरमा चुका है:— इंसान के बस की बात नहीं है कि वह अल्लाह से बात कर सके (मगर अल्लाह तआला जो सुझाना चाहता है) वह बात दिल में डाल दी जाती है। (42:51)

अब प्रश्न यह उठता है कि अल्लाह तआला अपने जो राज इंसानियत के हित के लिए, खोलना चाहता है, वह अपने किस बन्दे पर खोलता है तो इस सवाल का जवाब ख़ुद इसी आयत में बता दिया गया है, रसूलों पर वह्य के जरिए, वलियों पर पर्दे के पीछे से और आम इंसानों में से उन पर जो उसके लिए जद्दोजहद करते हैं। ज़रूरी नहीं है जद्दोजहद करने वाला व्यक्ति ईमान वाला ही हो, यदि ईमान वाले लोग जद्दोजहद करना छोड़ दें गे तो क्या अल्लाह तआला अपने रहस्यों का खोलना बंद कर देगा? नहीं, अल्लाह तआला तो अपने बन्दों की जिंदगी दिन ब दिन राहतों भरी बनाना चाहता है, वह अपनी नेमतें उन पर मुकम्मल करना चाहता है, इस मक़सद को पूरा करने में जो व्यक्ति भी अपना योगदान देगा और जद्दोजहद करेगा अल्लाह उसे नवाजेगा, अपने रहस्य उस पर खोलेगा। (29:69)

हाँ तो बात चल रही थी इंसानी जिस्म की पेचीदा और आश्चर्यचकित कर देने वाली बनावट की, दिल, गुर्दा, लीवर और गालब्लेडर, आंख नाक कान इत्यादि की बनावट तकनीक और आपरेशन व पैवंदकारी यह सब बातें तो अब पुरानी हो चुकी हैं ।आम आदमी भी अब थोड़ा थोड़ा इन्हें जान चुका है। इन पंक्तियों में आधुनिक खोज आटोफिजी के ताल्लुक से कुछ जानकारी शेयर करना है, हालांकि यह इतनी भी आधुनिक नहीं कि पढ़ा लिखा वर्ग भी नावाकफि हो अलबत्ता आम आदमी की पहुंच इस इल्म तक अभी नहीं। इंसानी जिस्म में कुदरती तौर पर यह क्षमता मौजूद है कि वह छोटी छोटी बीमारियों का उपचार स्वयं ही करले। हमारा जिस्म लातादाद (असंख्य) नज़र

न आने वाली छोटी छोटी कोशिकाओं से मिल कर बना है। यह कोशिकाएं निरंतर बनती बिगड़ती यानी नष्ट होती रहती हैं। नई कोशिकाएं पुरानी मृत कोशिकाओं की जगह लेती रहती हैं ।शरीर के प्रत्येक अंग की कोशिकाएं अपने काम के अनुसार किसी दूसरे अंग की कोशिकाओं से भिन्न होती हैं। इंसानी जिस्म इन्हीं कोशिकाओं के माध्यम से शरीर के विभिन्न अंगों की बीमारियों से लड़ने और उसे स्वस्थ रखने का काम करता रहता है। हालांकि कुछ कोशिकाएं मृत अवस्था में कूड़े कबाड़ की तरह शरीर में पड़ी रह जाती हैं और वे शरीर को बीमारियों में धकेलने का कारण बनती हैं।

जापान के टोक्यो इंस्टीट्यूट आफ टेक्नालॉजी नोबल इनाम याफ्ता डाक्टर योशिनोरी ओशमी (जन्म 9/02/1945) जोकि आटोफिजी के विशेषज्ञ हैं, वह स्वयं हैरान हैं मानव शरीर में आटोफिजी प्रक्रिया के पाए जाने पर। इस प्रक्रिया में कुछ विशेष कोशिकाएं जो सुप्तावस्था में मौजूद होती हैं, स्वयं ही उन कबाड़ रूपी कोशिकाओं को खाने के काम पर लग जाती हैं। अब डा० योशिनोरी के सामने प्रश्न यह था कि इन आटोफिजी कोशिकाओं को ज़्यादा से ज़्यादा एक्टिव अवस्था में बनाए रखने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इस प्रश्न का उत्तर खोजने पर पाया गया कि जब इंसान भूखा होता है तब यह सुप्तावस्था में पड़ी आटोफिजी कोशिकाएं स्वयं ही उन कबाड़, गली सड़ी कोशिकाओं को खाने के काम पर लग जाती हैं और नतीजे में शरीर को बीमारी से मुक्ति मिलने लगती है।

आज की दुनिया में बेशक यह हमारे लिए एक वैज्ञानिक खोज है मगर उस मालिक ने जो ख़ालिक़े क़ायनात है, जिस्म के निजाम को चुस्त–दुरुस्त रखने के लिए शरीयत के ताल्लुक़ से जिन्दगी गुजारने का जो सलीक़ा सिखाया उस में रोजे को बुनियादी स्तम्भों में से तीसरा स्तम्भ करार दिया है। साथ ही रसूल्लाह सल० ने प्रत्येक महीने में तीन रोजे रखने की सलाह देकर यह सिद्ध कर दिया कि इस्लाम उसी खुदा का उतारा हुआ दीन है जिसने यह कायनात बनाई है, जिसने इंसान की रचना की है। मशीन को बनाने वाला ही बेहतर जानता है कि कब और कैसे उसकी सर्विसिंग की जाना चाहिए। इतना ही नहीं बल्कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह भी सलाह दी है कि जब खाना खाओ तो पेट का एक तिहाई हिस्सा खाली छोड़ दो, यह सेहत के लिए बेहतर है। उस जमाने के इंसान को यदि शरीर की रचना के बायलोजिकल रहस्य बताए जाते तो उन्हें समझ ही न पाता। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने कायनात में फैली हुई अपनी निशानियों का तजकरा सरल भाषा में करने के साथ साथ भविष्य में अग्रिम खोज के लिए इशारा कर दिया, यह कह कर कि इसमें अक़्ल वालों के, गौर–फिक्र करने वालों के लिए निशानियां हैं।

आटोफिजी प्रक्रिया को ज़्यादा effective बनाने के लिए यह भी ज़रूरी है कि हम अपने खाने पीने के मध्य उचित अंतराल (वकफा) भी रखें। क्योंकि विभिन्न खाद्य पदार्थों के पचने के लिए समय भी कम या ज़्यादा लगता है। यक़ीनन अल्लाह तआला का किया हुआ वादा, जिस में कहा गया हैः– अतिशीघ्र हम अपनी निशानियां तुम्हें दिखायेंगे आफाक़ में भी और तुम्हारे भीतर भी, यहां तक कि स्पष्ट हो जाएगा कि यही सत्य है इस ज़माने में पूरा हो चुका है और जो कुछ आगे दिखाना शेष है वह अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है ।

❖❖❖

नैतिकता से खाली शिक्षा संसार के विनाश का कारण

मौ0 सै0 वाजेह रशीद नदवी

इस्लाम की यह विशेषता है कि उसने दूसरे धर्मों के मुकाबले में शिक्षा ग्रहण करने पर सबसे अधिक जोर दिया और उसको अपनी धार्मिक शिक्षा में शामिल करके अहले इल्म को एक बड़ा मुकाम दिया है, लेकिन इस्लाम ने शिक्षा को दो हिस्सों में बांटा है।

लाभप्रद ज्ञान और हानिकारक ज्ञान, आज के दौर में हानिकारक ज्ञान का सबसे अधिक प्रयोग हो रहा है। ये दौर शिक्षा के प्रसार और इल्म के चलन का है। इस दौर में इल्म वालों का अनुपात हर दौर से ज़्यादा है आज तालीम व तरबियत के केन्द्र गांव–गांव स्थापित हैं। होना तो यह चाहिए था कि शिक्षा के ये केन्द्र बराबरी व एकता का पाठ पढ़ाते, मानवता का सन्देश देते, नैतिक मूल्यों को विकसित करते, मिल जुल कर रहने का ढंग बताते, भलाई और खैरख्वाही (शुभचिंतन) की भावना को आम करते और सोसाइटी के विकास में अहम भूमिका निभाते लेकिन हुआ उसका बिल्कुल उलटा। आज शिक्षा, शोषण के तरीके बताने और स्वार्थ परता सिखाने का माध्यम बनती जा रही है और यही रूजहान वर्तमान समय के इन्सान की महरूमी और बदबख़्ती का कारण है। इसी वजह से इन्सान आपस में झगड़ रहा है और एक दूसरे के खून का प्यासा बना है। खानदान–खानदान और हुकूमत हुकूमत से टकरा रही है। इसका कारण उद्देश्यों का टकराव और अपने उद्देश्य पर आग्रह एवं ज़िद है। शिक्षा आज गुमराह करने का माध्यम बन चुकी है। अब शिक्षा के साये में साजिशों का जाल बुना जाता है और शिक्षा के केन्द्र भय और दहशत का माहौल पैदा करते हैं। जो देश शिक्षा में विकसित हैं वहीं इन्सानों की हत्या करने के खतरनाक हथियार बनाये जाते हैं। वहीं शिक्षा के माध्यम से मुजरिमों के जुर्म को छुपाने और बेकुसूरों को मुजरिम बनाने का कार्य किया जाता है। यह वह देश हैं जो शिक्षा में सर्वोत्तम और विकसित सभ्यता में उच्चतम समझे जाते हैं।

उन्हीं विकसित देशों में एक देश इसराईल है, जो शिक्षा में दूसरी कौमों से बहुत आगे है लेकिन उसने दूसरों के देश पर कब्जा कर रखा है और वहां के असली नागरिकों पर अत्याचार के पहाड़ तोड़ रहा हैं। वहां के शहरियों को दूसरे देशों में पनाह लेने पर विवश किया है और उनका समर्थन वही राष्ट्र कर रहे हैं, जो शिक्षा व संस्कृति में दूसरी कौमों से ऊंचा स्थान रखते हैं। इसराईल अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करता है और उनका बुद्धिजीवी वर्ग लेखक व मीडिया और यूरोप देशों में रहने वाले नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता इन पापों का समर्थन करते दिखाई देते हैं।

उन्हीं देशों में पूर्व सोवियत संघ की मिसाल है जिसने अफगानिस्तान पर कब्जा किया और लाखों बेगुनाह लोगों की हत्या की। लाखों को देश से निष्काशित किया फिर उनके शहरियों के अधिकार छीन लिये। अत्याचार के माध्यम से वहां के नागरिकों को दूसरे देशों में पनाह लेने पर विवश किया अपने मिथ्या विचारों के अनुसार

जीवन पद्धति अपनाने पर जोर दिया। विश्व के एक बड़े भाग ने उस के सत्ता काल में अत्याचार सहे और दासता का जीवन बिताया, और उस दर्शन से प्रभावित लोगों ने दूसरे की धारणाओं (विश्वासों) पर हमले किये। शिक्षा में विकसित देश लम्बे समय तक अपनी शिक्षा और सभ्यता व संस्कृति को उच्चस्तरीय होने का दावा अलापते रहे और समस्त विश्व को निरक्षर साबित करने पर तुले रहे। उन्होंने कानून बदले और इतिहास गढ़े और स्थानीय संस्कृतियों को बिगाड़ने का कार्य किया और उस पर अपनी भाषा और अपनी संस्कृति का प्रयत्न किया। उसने फिलिस्तीन और कबरस का मसला पैदा किया और वांशिक आधार पर देशों की सहायता की और विश्व को उस दो राहे पर ला खड़ा किया जहां केवल हत्या व भय का वातावरण है। ब्रिटिश के अत्याचारों का अनुमान भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन से लगाया जा सकता है। भारत के एक प्रसिद्ध पत्रकार ने अपनी पुस्तक में साबित किया है कि अंग्रेजों ने भारत में सत्ता प्राप्त करने के लिये ग्यारह मिलियन व्यक्तियों की हत्या की।

शैक्षिक और सांस्कृतिक लिहाज से विकसित देश जर्मनी है। हिटलर के दौर में इन्सानों पर जो अत्याचार ढ़ाये गये वह इतिहास का महत्वपूर्ण अंश है। इन विकसित देशों ने दो विश्व युद्ध प्रायोजित किये जिनमें सत्तर मिलियन जानें गई। जर्मनी में यहूदियों को जीवित जलाये जाने की घटना (हक़ीक़त या अफसाना) इन्कार तो दरकिनार उस पर शक करना भी न माफ किये जाने वाला पाप है। लेकिन यहां प्रश्न यह है इस घटना को अंजाम किसने दिया? क्या मुसलमानों ने जिन पर आतंकी गतिविधियों में लिप्त होने का आरोप है या पूरबी नागरिकों ने जिन पर अशिक्षा और निम्नस्तरीय जीवन जीने का लेबल लगा है? उत्तर उसका केवल एक ही है कि जलाने की ये घटना अगर सत्य है तो यूरोप संस्कृति की प्रतिनिधित्व करने वाली क़ौम जर्मन नागरिकों की दरिंदगी का खुला सबूत है और अगर झूठ है तो पश्चिमी दुनिया के झूठ पर एकमत होने का एक उदाहरण है।

इन सभ्य तथा विकसित देशों में सबसे पहला नाम अमेरिका का है। जिसने जापान में बेकुसूर जापानियों पर एटम बम गिराकर लाखों इन्सानों को मौत की नींद सुला दिया। वर्षों उसने वेतनाम में खून की होली खेली और निहत्थे वियतनामियों के साथ वह व्यवहार किया जो भेड़िया बकरी के साथ करता है। उसके बाद जब उसकी खून की प्यास नहीं बुझी तो अफगानिस्तान ईराक, फिलिस्तीन का रूख किया और उनको अपने अत्याचार का निशाना बनाया।

इन विकसित देशों में एक नाम फ्राँस का भी है जिसने अलजजाइर में दस लाख मुसलमानों का ख़ून बहाया। धार्मिक तथा सामाजिक मान्यताओं के विरूद्ध बागियों की एक पूरी सेना तैयार करके समस्त विश्व में उसका जाल बिछाया।

ये कुछ उदाहरण थे इन विकसित, सुसंस्कृति तथा सभ्य देशों के अगर इन पश्चिमी देशों का खूनी इतिहास लिखा जाए और उनके अत्याचार की सत्य कथाएं पूरी व्याख्या के साथ लेखनी में लाई जायें तो जिल्दों की जिल्दें तैयार हो सकती है। अल्लाह हम को लाभदायक ज्ञान प्राप्त करने का सामर्थ्य दे।

❖❖❖

ईद मनाने का अधिकार केवल रोज़ेदार को है

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

प्रख्यात विद्वान हजरत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह० ने लिखा है कि ईद दरअस्ल रमजान की ईदी है। जैसे आप बच्चों को ईदी देते हैं उसी प्रकार अल्लाह ने हम सबको ईद के स्वरूप में ईदी दी है।

रमजान की आजमाइश से गुजरने के पश्चात अल्लाह जो पुरस्कार स्वरूप अपने बन्दों को भेंट देता है उसका नाम ईद है। ईद का ये पर्व खुशियों का खजाना लेकर आता है। इस महीने को अल्लाह ने अपना महीना बताया है और ईद भी उसी महीने की देन है। क्योंकि जिस प्रकार आम का पेड़ लगाने से आम ही खाने को मिलेगा बिना पेड़ के आम नहीं खा सकते। वैसे ही बिना रमजान के ईद की खुशियों नहीं मना सकते।

ये पर्व सारी खुशियों को समेट कर अल्लाह के दरबार में जाने और सज्दा करने का दूसरा नाम है। ईद का तात्पर्य खुशी, मेलजोल और भाई चारा है। जिस दिन ईद होती है अल्लाह सारे जहाँ की ख़ुशियों को समेट कर बन्दे की झोली में डाल देता है। साथ ही उससे आशा रखता है कि जिस परहेजगारी से उसने रोजा रखा और उनको पूरा किया तथा जो शिक्षा रमजान में मिली उसे अपने जीवन में ढ़ाले।

ईद में खुशियों को बाँटने को कहा गया है। यदि कोई व्यक्ति ईद की खुशी मनाता है और अपने लिए हर प्रकार की खुशियाँ हासिल करता है तो ठीक उसी प्रकार वह व्यक्ति पास–पड़ोस के गरीब लाचार व्यक्तियों को खुशी मनाने हेतु हर सम्भव सहयोग करे। यदि उसके पास अच्छे कपड़े नहीं है तो उसे कपड़े दे, उसके बाल–बच्चों की खैर ख़बर ले। क्योंकि ईद की खुशियों में उनको भी शामिल करने को कहा गया है। ये कदापि उचित नहीं है कि लोग ईद की खुशियाँ मनाएं और उनके पड़ोसी अच्छे परिधान से वंचित तथा भूखे रहें। इसीलिए इस्लाम ने सदक–ए–फित्र को अस्तित्व प्रदान किया। ईद की नमाज़ से पूर्व सदक–ए–फित्र अदा करना अनिवार्य है ताकि समाज के निर्धन असहाय सभी खुशी के इस त्योहार में शरीक हो सकें।

ये सदक–ए–फित्र प्रत्येक मुसलमान मर्द औरत पर वाजिब (ज़रूरी) है। जबकि नाबालिग औलाद का उसके अभिभावकों पर है। ये सदक़–ए–फित्र रोजे में किसी भूल–चूक का हर्जाना भी होता है जिसके द्वारा रोज़ेदार अपने को पाक–साफ़ करता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि रोज़ेदार का रोज़ा ज़मीन और आसमान के बीच उस समय तक लटका रहता है जब तक उसकी ज़कात अर्थात सदक–ए–फित्र अदा न की जाए क्योंकि किसी सक्षम मुसलमान की खुशी उस समय तक अधूरी रहती है जब तक समाज के असहाय और निर्धन लोग ईद की खुशियों में शामिल न हों।

रमजान के पूरे रोजे अल्लाह के आदेशानुसार रखने के पश्चात बन्दा जब ईद की नमाज़ के लिए ईदगाह जाता है तो अल्लाह फरिश्तों से पूछता है कि बताओ उस मजदूर की मजदूरी क्या है? जिसने अपना काम पूरा किया। फ़रिश्ते कहते हैं कि उसे पूरी मजदूरी मिलनी चाहिये। अल्लाह फरिश्तों से कहता है कि जाओ, जाकर मेरे बन्दों को यह खुशख़बरी सुनाओ, जिन्होंने मेरे लिए रोजे रखे, आज यह सब बरी कर दिये गए। फिर वह अपने घरों को ऐसे हाल में वापस लौटेंगे जैसे वह अपनी माँ के गर्भ से अभी जन्मे हों।

शेख अब्दुल कादिर जीलानी (रह०) ने लिखा है कि ईद उनकी नहीं जिन्होंने नए कपड़े पहने। ईद तो उनकी है जो अल्लाह की पकड़ से बच जाएं।

ईद उनकी नहीं जिन्होंने ढेर सारी खुशियाँ मनाई। ईद तो उनकी है जिन्होंने अपने पापों का प्रायश्चित कर लिया और फिर उस पर जमे रहे। फारूक़े आज़म हज़रत उमर (रज़ि0) के ख़िलाफ़त के दौर में कुछ लोग उन्हें ईद के अवसर पर बधाई देने आए। देखा अमीरुलमोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि०) दरवाज़ा बंद करके आँसू बहा रहे हैं। लोगो ने हैरत से पूछा, ऐ खलीफ़ा, आज तो ईद का दिन है, खुशी मनाने का दिन है, फिर ये रोना कैसा? ख़लीफ–ए–सानी ने कहा ऐ लोगों ये ईद का भी दिन है और वईद (चेतावनी) का भी दिन है, आज जिसकी नमाज़ रोजा अल्लाह के दरबार में कुबूल हुई उसके लिए ईद है और जिसके रोजे उसके मुंह पर खींच कर मार दिये गए उसके लिए तो वईद (चेतावनी) का दिन है और इस डर से रो रहा हूँ कि मुझे नहीं पता कि मैं स्वीकार किया गया अथवा अस्वीकार।

❖❖❖

पृष्ठ ..15...का शेष

तब नमाज़ शुरुअ़ करेंगे उस वक़्त अल्लाह को याद करेंगे, अगर हज फर्ज़ हो गया तो यह सोचते हैं कि जब उम्र ज़्यादा हो जाएगी, तब हज को जाएंगे खुदा जाने कितने दिन ज़िन्दगी है, कितनी मुहलत मिली हुई है, वक़्त आता है नहीं आता, अगर बुढ़ापा आ भी गया तो मालूम नहीं उस वक़्त हालात साजगार हों न हों, लिहाजा इस वक़्त नेकियां कर गुज़रो।

क्या मौत का इन्तिज़ार है?:–

या तुम उस मौत का इन्तिज़ार कर रहे हो जो अचानक आ जाए, अभी तो तुम नेक आमाल को टाल रहे हो कि कल कर लेंगे, परसों कर लेंगे, कुछ और वक़्त गुजर जाए तो शुरुअ़ कर देंगे क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि मौत अचानक भी आती है। कभी कभी तो मौत पैगाम देती है अल्टी मेटम देती है, लेकिन बाज अवक़ात बगैर अल्टीमेटम के भी आ जाती है, और आज की दुनिया में तो हादसात का यह आलम है कि कुछ मालूम नहीं किस वक़्त इन्सान के साथ क्या हो जाए वैसे तो अल्लाह तआ़ला नोटिस भेजते हैं।

क्या दज्जाल का इन्तिज़ार है?:–

क्या तुम दज्जाल का इन्तिजार कर रहे हो? और यह सोच रहे हो कि अभी तो ज़माना नेक अमल के लिए साज़गार नहीं है तो क्या दज्जाल का ज़माना साज़गार होगा? जब दज्जाल जाहिर होगा तो क्या इस फितने के आलम में नेक अमल कर सकोगे? खुदा जाने उस वक़्त क्या आलम हो, गुमराही के कैसे मुहर्रकात और तकाजे पैदा हो जाएं, तो क्या तुम उस वक़्त का इन्तिज़ार कर रहे हो? यानी दज्जाल बदतरीन चीज़ है जिस का इन्तिज़ार किया जाए, बल्कि उसके आने से पहले पहले नेक अमल कर लो, और आखिर में फरमाया–

क्या क़यामत का इन्तिज़ार है?:–

या फिर क़यामत का इन्तिज़ार कर रहे हो? तो सुन लो कि क़यामत जब आएगी तो इतनी मुसीबत की चीज़ होगी कि उस मुसीबत का कोई इलाज इन्सान के पास नहीं होगा तो उस के आने से पहले नेक अमल कर लो।

पूरी हदीस का खुलासा यह है कि किसी नेक अमल को टालो नहीं, और आज के नेक अमल को कल पर मत छोड़ो, बल्कि जब नेक अमल का जज्बा पैदा हो, उस पर फौरन अभी अमल कर लो, अल्लाह तआला मुझे और आप सब को उस पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए। आमीन!

❖❖❖

अवध के नवाब और हिन्दू ओहदेदार

शमीम इक़बाल खाँ

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद हिन्दू–मुस्लिम एकता पर ज़ोर देते थे और एक बार यह कहा था कि ''आज अगर एक देवदूत आकाश की ऊँचाइयों से उतर कर आये और देहली के कुतुबमीनार पर खड़ा हो कर यह घोषणा करे कि स्वराज 24 घन्टे में मिल सकता है यदि भारत हिन्दू–मुस्लिम एकता को त्याग दे, तो मैं आज़ादी को त्याग दूंगा परन्तु हिन्दू–मुस्लिम एकता नहीं छोड़ूंगा क्योंकि अगर स्वराज नहीं मिला तो यह भारत का नुक़सान होगा और हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित नहीं हो सकी तो यह समस्त मानव जाति का नुकसान होगा।''

इस्लाम ने भी एकता पर ज़ोर दिया है और यही कारण रहा है कि मुगल बादशाहों के दरबारों में हिन्दू उच्च पदों पर नियुक्त रहे हैं यद्यपि मुगल बादशाहों को कदापि धार्मिक नहीं कहा जा सकता इसके उपरान्त भी उनमें धार्मिक पक्षपात नहीं था और इसी लिये उस दौर में हिन्दू– मुस्लिम दंगों का कोई इतिहास नहीं मिलता। आज के कुछ जाहिल और शांति के दुशमन लोग जिनको इतिहास का कोई ज्ञान नहीं है वह लोग महाराणा प्रताप और बादशाह अकबर की लड़ाई और शिवा जी और औरंगज़ेब की लड़ाई को धार्मिक युद्ध कहते हैं जबकि महाराणा प्रताप का सेनापति मुसलमान था और उनका नाम हाकिम ख़ाँ था उधर अकबर का सेनापति हिन्दू था और उनका नाम राजा मान सिंह था।

इसी प्रकार शिवा जी महराज की सेना में एक दो नहीं बल्कि 13 अदद मुस्लिम कमाण्डर थे, उस समय में शासकों ने धार्मिक कट्टरता नहीं बरती और हिन्दू लोगों पर पूरा भरोसा किया, इस सम्बन्ध में अवध के नवाबों ने जिन हिन्दू लोगों पर भरोसा कर के पद दिया उनमें कुछ का वर्णन निम्न में प्रस्तुत है।

अवध के शासकों में कायस्थों की बड़ी इज़्ज़त थी, मन्त्रियों में प्रायः यही लोग हुआ करते थे क्योंकि एक ज़माने से इनकी कार्य– करदगी (प्रदर्शन), बुद्धिमत्ता और मृदु–भाषी (मीठा बोलने वाला) होने के कारण राजनीति और समाज में इज़्ज़त थी, ये लोग जागीर दार भी होते थे। आम तौर पर यह देखा गया है कि अवध के शासकों ने खत्रियों को कोषाध्यक्ष और कायस्थों को मंत्री बनाया।

नवाबों के समय में जिन हिन्दू ओहदे–दारों का वर्णन मिलता है उनमें कुछ का वर्णन निम्नलिखित हैः–

1. राजा बेनी माधौः–

शंकरपुर के किलेदार बहादुर और वफ़ादारों में थे। जब अंग्रेज़ फ़ौज ने उन्हें तीन तरफ़ से घेर लिया तो अंग्रेज कमाण्डर ने उन्हें यह पैग़ाम भेजा कि अब लड़ने से कोई फ़ायदा नहीं, हथियार डाल दें तो उनको माफ़ कर दिया जायेगा। इस बहादुर ने जवाब दिया ''चूँकि अब किले को बचाना ना मुम्किन है लिहाजा मैं इसे छोड़ रहा हूँ लेकिन ख़ुद को तेरे हवाले नहीं करूँगा, अपनी जान का मालिक मैं खुद हूँ लिहाज़ा यह मिल्कियत मेरे बादशाह की है इसलिये हथियार नहीं डाल सकता।''

2. राजा कुंवर सिंहः–

हरदोई के राजा कुंवर सिंह अपनी टुकड़ी के साथ अंग्रेज़ों के घेरे में आ गये। जब

कोई सूरत निकलने की नहीं देखी तो अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि हथियार डाल दो लेकिन खुद ने हथियार नहीं डाले और अंग्रेज कमान्डर को जवाब दिया ''यह फ़ौज मेरे मातहती में थी और उन्हें हलाक़त में डालने से कोई फ़ायदा नहीं, मैं खुद बिरजिस कद्र की मातहती और मिलकियत में हूँ मुझे हुक्म देने के लिये वह यहॉ मौजूद नहीं हैं।'' और हाथ में तलवार लेकर अकेले ही अंग्रेज़ों की फ़ौज में घुस गये और पल भर में शहीद हो गये।

3. राजा जिया लालः–

राजा जिया लाल का किस्सा भी अंग्रेज़ों की जुल्म की इन्तिहा है। यह बेगम के वफ़ादारों में थे और वज़ीर के ओहदे पर तैनात थे। अग्रेज़ों से जंग जीतने के बाद इन्हें गिरिफ़्तार करके फाँसी पर लटका दिया गया और मौत के बाद इन्हें डेढ़ रूपये का कफ़न देकर दफ़न कर दिया गया। हिन्दू रस्म–ओ–रिवाज के मुताबिक़ इनका क्रिया–कर्म नही कराया गया। इसी तरह एक मुस्लिम शहीद की लाश को जलवा दिया गया जबकि बेगम हज़रत महल ने अंग्रज़ों की लाशों को ईसाई रस्म–ओ–रिवाज के मुताबिक दफ़न कराया था।

4. राजा जिया लाल को श्रद्धाजंली पेश करते हुये 'लक्षमण पार्क' के पश्चिम की ओर राजा जिया लाल के नाम से 'राजा जिया लाल पार्क' का बोर्ड लगवा दिया गया। भारत की जमीन कभी भी बहादुरों से खाली नहीं रही है इसके उपरांत भी आज़ादी की अंतिम लड़ाई अंग्रेज़ों के हाथ रही क्योंकि जयचन्द और मीर कासिम जैसे लोग ऐसे औसरों पर पैदा होते रहते हैं और चन्द सिक्कों के लिये अपनी आत्मा और धर्म बेचते रहते हैं।

5. अवध के पहले नवाब बुरहानुल मुल्क के भरोसे मन्द वज़ीर राजा लक्ष्मी नरायन की संस्तुति पर ही नादिर शाह ने बुरहानुल मुल्क के दामाद (जो उनके भांजे भी थे) को अबूमंसूर की उपाधि मिली और अवध के सूबेदार बनाये गये।

6. बुरहानुलमुल्क के दीवान का नाम 'आत्माराम' था जिनके बेटे 'राम नारायण' ने फ़ैजाबाद में दिल्ली दरवाजा बनवाया। बुरहानुल मुल्क के हरम के दारोगा भी हिन्दू थे और इनका नाम 'राजा राय केशव राम जी' था।

7. नवाब सफ़दर जंग के वज़ीर 'राजा नवल राय' थे जो नवाब की अनुपस्थिति में हुकूमत का काम संभालते थे। मुल्ला निज़ामउद्दीन फिरंगी महली के संस्थापक के भाई के पोते मुल्ला मुफ़्ती याकूब सरकारी तौर पर मुफ़्ती शहर की हैसियत से तैनात थे और राजा साहब की अदालत में हाज़िर रह कर शरई फैसले राजा साहब को बताते थे और उसी के अनुसार फ़ैसला सुनाते थे। इन्हीं के शासन काल में 'राजा भगवान दास' को मीर मुंशी बना कर दिल्ली भेजा गया था। इनकी जागीर में काकोरी परगना के कई गांव और महोना जमालपुर मिला था। फिर उनके छोटे भाई राजा बिशन सिंह मीर मुंशी बने। नवाब सआदत अली खॉ के ज़माने में इनके बेटे दौलत राय अन्त तक इसी पद पर बने रहे।

नवाब शुजाउद्दौला की सेना में राजा शिताप राय को भी प्रतिष्ठिा वाला पद प्राप्त था। राजा बेनी बहादुर ने अंग्रेज़ों से जंग में नवाब का साथ दिया था। उन्हीं के समय में राजा पूर्ण चन्द्र रिपोर्टर थे इसके अतिरिक्त फौजी ओहदे दारों में हिम्मत बहादुर, उमरावगीर, गोपाल राव आदि नामों का वर्णन मिलता है।

8. नवाब आसिफउद्दौला के शासन काल में पूर्वी क्षेत्र का पर्वेक्षक 'राय बेनी लाल' को बनाया गया था। राय बाल कृष्ण और जसवन्त राय जो राजा पूर्ण चन्द्र के क्रमशः– बेटे और

दामाद थे, उनके मंत्रिमंडल में सम्मिलित थे।

9. राजा टिकैत राय नवाब आसिफ़उद्दौला के वित्त विभाग के मंत्री थे और साथ ही साथ उनके दीवान भी थे। राजा साहब के बनवाये मंदिर, शिवाले, ठाकुद्वार, मस्जिदें, तालाब, धर्मशाले, घाट और उनके नाम से आबाद मोहल्ले काफ़ी तादाद में मिलते हैं। उन्हें उस समय हिन्दू धर्म का रक्षक कहा जाता था। उनके द्वारा प्रयाग में बनवाया गया धर्मशाला देखने के काबिल है। राजा साहब की धर्म–निर्पेक्षता का जीता–जागता सुबूत उनके द्वारा निर्मित मस्जिदें, इमाम बाड़े भी हैं। हैदर गंज में राजा टिकैत राय की मस्जिद देखने के लायक है।

10. राजा झाऊ लाल भी नवाब आसिफ़उद्दौला के दूसरे मंत्री थे जो नवाब शुजाउद्दौला के समय से काम कर रहे थे। हर एक में बड़ी इज्जत की नज़र से देखे जाते थे। उन्हों ने भी किसी भेद–भाव के बगैर मंदिर, मस्जिद और इमामबाड़ों का निर्माण करवाया। उनकी बनवाई हुई मस्जिद ठाकुरगंज में मौजूद है।

11. राय खेम नरायण रिन्द नवाब आसिफउद्दौला के एक दरबारी थे जिन्होंने बीस हज़ार शेर कहे, 'हीर रांझा', 'नल–दमयन्ती' और 'चार–दरवेश' उनकी प्रसिद्ध कृतियॉ हैं।

12. उन्हीं के ज़माने में एक दूसरे दरोगा जोर आवर सिंह थे जो कायस्थ थे और बेनी नारायण नाम के एक दूसरे कायस्थ उनके दरबार के मुंशी थे। दीवानी में कई अन्य हिन्दू ओहदे दार व कर्मकार भी थे।

13. गुरूबख्श अदीब नाम का एक कहार था जो बादशाह के मुंह लगा था और उनको शायरी सुनाया करता था।

14. राजा दयाकृष्ण, बालकृष्ण, तुलसी राम और मुंशी भोला नाथ का भंडारण विभाग से सम्बन्ध था। बालकृष्ण के पुत्र राजा तेजकृष्ण ने लखनऊ में तेजी खेड़ा मोहल्ला बसाया। इनकी हवेली मोहल्ला भदेवां के पास थी। सन् 1857 के संग्राम में राजा बालकृष्ण, बेगम हज़रत महल की ओर से अंग्रेज़ों से लड़ते हुये वीर गति को प्राप्त हुये थे। अंग्रेज़ो ने उनकी हवेली गिरवा दी थी। मोहान रोड पर महाराज गंज का कस्बा उन्हीं के नाम से आबाद है।

अवध के नवाबों के साथ व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क में रहे हिन्दू ओहदे दारों के अतिरिक्त दूसरे ओहदों पर नियुक्त हिन्दू ओहदे दारों की एक लम्बी सूची है जिनसे यह प्रतीत होता है कि मंसबदारों के चयन में किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं बरता जाता था। सभी कौमी यकजहती *(National Integrity)* के साथ आपसी मेल–मिलाप के माहौल में काम करते थे। इस प्रकार का माहौल नवाब वाजिद अली शाह के समय तक क़ायम रहा।

राजा बालकृष्ण नवाब वाजिद अली शाह के वज़ीर थे और राजा बिहारी लाल उनके अच्छे दोस्त थे और ठाकुर प्रसाद उनको कत्थक सिखाते थे। उनके वजीर अली नकी खॉ ने ठाकुर गंज की एक हिन्दू विधवा की ज़मीन हड़प ली थी तो बादशाह ने न सिर्फ ज़मीन वापस दिलाई बल्कि मन्दिर बनाने के लिये भूमि भी उपलब्ध कराई बल्कि धन भी उपलब्ध कराया।

नवाब वाजिद अली शाह जहाँ, ईदुलफ़ितर और ईदुलअज़हा धूम–धाम से मनाते थे वहीं बड़े मंगल पर दिल खोल कर ख़र्च करते थे साथ ही साथ ब्रम्ह–भोज भी कराते थे।

इसी प्रकार बेगम हज़रत महल के समय में राजा जैलाल सिंह और राजा बेनी माधव राजा हनुमन्त सिंह और अन्य कई हिन्दू राजाओं ने उनके आन और वतन की शान के लिये अपनी जानें न्योछावर कर दी थी।

शेष पृष्ठ ..32...पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एहराम के कपड़े कैसे होने चाहिए, क्या एहराम के लिए सफेद कपड़े ही ज़रूरी हैं, अगर किसी शख्स ने रंगीन कपड़ों में एहराम बांध लिया तो उसके बारे में क्या हुक्म है?

उत्तरः एहराम में मर्दों के लिए सफेद कपड़ों का इस्तेमाल अफज़ल है, अगर किसी ने सफेद के अलावा कोई और दूसरा रंग मसलन काला, लाल, पीला या हरा वगैरा इस्तेमाल किया तो भी दुरुस्त है, या रंगीन ऊनी चादर ओढ़ ली तो भी कोई हरज नहीं।

(रद्दुल मुहतारः 3/488)

प्रश्नः एहराम बांधने से पहले गुस्ल करना, कंघी करना, तेल लगाना, और कपड़ों पर खुशबू लगाने वगैरा का क्या हुक्म है?

उत्तरः एहराम से पहले गुस्ल करना, और गुस्ल के बाद बदन पर इत्र लगाना मसनून है, इसी तरह कंघी करना और गुस्ल करने के बाद सर और दाढ़ी में तेल लगाना मुस्तहब है, लेकिन कपड़ों में ऐसी गाढ़ी खुशबू लगाना जिस का असर बाद तक रहे, दुरुस्त नहीं है, अलबत्ता मामूली हल्की किस्म की खुशबू लगाने की गुंजाइश है, लेकिन बेहतर नहीं है।

(दुर्रे मुखतार मए रद्दुल मुहतारः 3/488)

प्रश्नः एहराम की लुंगी दरमियान से सिल कर पहनना कैसा है, क्योंकि बसा औक़ात सिली न होने की वजह से उसका बांधना दुशवार होता है, और सत्र खुलने का भी अन्देशा रहता है, अगर नीचे के कपड़े को दरमियान में सिल दिया जाए तो क्या इस तरह से एहराम में कोई नक़्स तो नहीं होगा?

उत्तरः अफज़ल यही है कि एहराम की लुंगी बिल्कुल सिली हुई न हो, लेकिन अगर सत्र खुलने के अन्देशे से उसे बीच से सिल कर पहना जाए तो इसकी भी गुंजाइश है।

(रद्दुल मुहतारः 3/499)

प्रश्नः हालते एहराम में मिस्वाक करना कैसा है?

उत्तरः मिस्वाक हर हाल में मसनून और मुस्तहब है, हालते एहराम में भी और गैर एहराम में भी।

(रद्दुल मुहतारः 1/233–234)

प्रश्नः हालते एहराम में औरतों के लिए ज़ेब व ज़ीनत खास तौर से जेवरात और चूड़िया वगैरा पहनना कैसा है?

उत्तरः हालते एहराम में औरतों के लिए ज़ेब व ज़ीनत खास तौर से ज़ेवरात और चूड़ियां पहनने की इजाज़त है, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा में हज़रत उबैदुल्लाह की रिवायत है कि अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की औरतें और बेटियां हालते एहराम में जेवरात इस्तेमाल करती थीं, फुकहा ने जेवारात के जवाज़ को नक़्ल किया है।

(बदाए सनाएः 2/410)

प्रश्नः एक मुहरिम (एहराम पहना हुआ आदमी) का दूसरे मुहरिम को सिला कपड़ा पहनाना या खुशबू लगा देना कैसा है?

उत्तरः अगर एक मुहरिम ने दूसरे मुहरिम को सिला हुआ कपड़ा पहनाया, खुशबू लगाई, या उसके सर या चेहरे को ढांक दिया तो ढांकने वाले मुहरिम पर कोई जुरमाना वाजिब नहीं, अलबत्ता जिस मुहरिम को सिला कपड़ा पहनाया और खुशबू लगाया है, उस पर जुरमाना वाजिब है।

(मनासिक मुल्ला अली क़ारीः 334)

प्रश्नः एहराम की हालत में दाढ़ी या मोंछ के बाल काटना कैसा है?

उत्तर: अगर किसी मुहरिम ने हलाल होने के वक़्त से पहले सर या दाढ़ी के चौथाई हिस्से के बाल मुंडवाए या कतरवाए तो उस पर दम वाजिब होगा, और अगर मोंछों को मुंडवाए या कतरवाए तो उस पर सदक़ा वाजिब होगा।

(गुनीयतुन्नासिकः 255)

प्रश्न: मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम के दौरान कसरत से तवाफ करना अफज़ल है या उमरा करना या नफ़्ल नमाजें पढ़ना, इन तमाम में सबसे बेहतर और अफज़ल अमल कौन सा है?

उत्तर: मक्का मुअ़ज़्ज़मा में क़ियाम के दौरान कौन सा अमल अफज़ल है, इस बारे में कुछ तफ़्सील है और वह यह है कि अगर कोई शख़्स इतने वक़्त तक तवाफ में मुसलसल मशगूल रहता हो जिस में उमरा किया जा सकता है तो तवाफ अफज़ल है और अगर इतनी मुद्दत तक तवाफ में मशगूल नहीं रहता बल्कि तवाफ में कम वक़्त लगाता है तो ऐसी सूरत में उमरा करना अफज़ल है।

(गुनीयतुन्नासिकः 138)

प्रश्न: अगर कोई शख़्स तवाफ की हालत में अपना चेहरा बैतुल्लाह शरीफ की जानिब कर ले तो क्या इस का तवाफ बातिल हो जाएगा, या उसका दोहराना वाजिब होगा, क्या न दोहराने की वजह से दम वाजिब होगा?

उत्तर: आदाबे तवाफ में से यह है कि अपनी नज़र चलने की जगह पर रखे, इधर उधर न दौड़ाए, अगर कोई शख़्स दौराने तवाफ बैतुल्लाह शरीफ को देखे जब कि उस का सीना और पैर बैतुल्लाह की तरफ न हो तो उस का यह अमल खिलाफे अदब है और मकरूहे तनजीही है, तवाफ का दोहराना वाजिब नहीं है और न दम है, और अगर चेहरा व सीना दौराने तवाफ बैतुल्लाह शरीफ की तरफ कर ले भीड़ भी न हो तो इस सूरत में तवाफ का दोहराना लाज़िम है, और न दोहराने की सूरत में दम वाजिब होगा, हाँ अगर मताफ में इस क़दर भीड़ हो कि बिला इरादा चेहरा या सीना बैतुल्लाह की तरफ हो जाए तो यह उज़्र है, इसकी वजह से न तवाफ का दोहराना है, न कराहत है, और न ही दम वाजिब है।

(फत्हुल क़दीरः 3/58)

❖❖❖

पृष्ठ ..30...का शेष

नवाबी दौर में हिन्दू ताज़िया दारी करते थे और सूफ़ी सन्तों की दरगाहों पर मन्नतें मानते थे वहीं दूसरी ओर मुसलमान चेचक निकलने पर शीतला देवी की मन्दिर से पानी और फूल मंगाते थे।

मोहल्ला आबाद कराने में भी हिन्दू–मुस्लिम एकता का ख़्याल रखा जाता था। दोनों आबादियाँ साथ साथ हुआ करती थीं जिनकी मिसालें अभी तक देखने को मिलती हैं। हुसैनाबाद में राम गंज, मंसूर नगर में कशमीरी मोहल्ला, राजा बाज़ार के साथ कटरा अबुतराब खॉ, गणेशगंज के साथ नवाब गंज और टिकैतगंज के साथ मेहदी गंज आदि। इसी प्रकार अलीगंज का मशहूर मंदिर और टिकैत गंज, सरसा शेख, नवाब गंज के मन्दिरों को मुसलमानों ने बनवाया। अमीनाबाद में पड़ाइन की मस्जिद, मोलवी गंज, मेहदीगंज और ठाकुर गंज की मस्जिदों हिन्दुओं ने बनवाई।

राजा झाउलाल के इमामबाड़े के निकट ही गोमती दास का मन्दिर नवाब आसिफउद्दौला ने निर्मित कराया था।

योगेश प्रवीण को अवध की इतिहास का विशेषज्ञ कहा जाता है वह लिखते हैं 'वास्तव में नवाबों का ज़माना आपसी मेल जोल, धार्मिक रवादारी और आपसी मोहब्बत का जमाना था। इतिहास साक्षी है कि उस दौर में कभी हिन्दू–मुस्लिम दंगे नही हुये।''

सन्दर्भः–

1. नवाबी अहेद के हिन्दुओं का फारसी अदब में योगदान द्वारा नरेन्द बहादुर श्रीवास्तव।
2.दास्तान–ए–अवध द्वारा योगेश प्रवीण।

देश बन्धुओं से सम्बोधन

(बड़े लेख का सारांश)

उज़्मा भोपाली

देश भाइयो! हम सब का विधाता एक, हमारी रगों में खून एक, हम सब का बाप एक, मां एक, हम सब एक मां बाप की सन्तान, हम सब की मंजिल भी एक, अर्थात हम सब को लौट कर एक ही द्वार पर जाना है, हम सब का उद्देश्य भी एक, अर्थात मोक्ष प्राप्त, तो फिर आइये देखें कि हमारे रास्ते भिन्न क्यों हैं?

धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने यह धरती बनाई इस को नाना प्रकार की वस्तुओं से सजाया फिर इस पर अपनी सर्वश्रेष्ठ सृष्टि मानव को बसाया और समस्त संसार की सारी वस्तुएं नदी, पहाड़, जंगल, पशु, पक्षी, सूर्य, चन्द्रमा सब को इस मानव (इन्सान) के लिये बनाया परन्तु इस मानव को अपनी उपासना के लिये बनाया तो अपने परिचय और अपनी उपासना के नियम बताने के लिये अपने सन्देष्टाओं का सिलसिला चलाया जो हर क्षेत्र तथा हर काल में आते रहे, उन्हीं पैगम्बरों (संदेष्टाओं) द्वारा हम को ज्ञात हुआ कि जब अल्लाह ने इन्सान (मानव) को पैदा करना चाहा तो फरिश्तों से कहा कि मैं इस धरती पर अपना प्रतिनिधि बनाना चाहता हूँ। फरिश्ते जो नूर (प्रकाश) से बनाए गये हैं और पाप रहित हैं (पाप रहित वह है जो किसी बात में भी ईश अवज्ञा न करे) वह बोले हे प्रभु! क्या आप इस धरती पर ऐसे को पैदा करेंगे जो इस पर भ्रष्टाचार तथा रक्त पात करे (किसी प्रकार उनको इस का भय लगा) हम लोग तो आप की प्रशन्सा तथा पवित्रता के जप में लगे ही हैं। अल्लाह ने कहा ''मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते हो।''

अल्लाह ने पहले मनुष्य आदम (अ०) को मिट्टी से बनाकर उन में जीव डाला और आदेश दिया कि तुम सब आदम को सज्दा करो सब नतमस्तक हो गये उन फरिश्तों के बीच अजाजील भी था, जो जिन्न था उस ने सजदा न किया कारण पूछने पर कहा आदम मिट्टी से हैं मैं आग से मैं इनसे श्रेष्ठ हूं, अपने घमण्ड में यह न समझ पाया कि अपने विधाता की अवज्ञा कर रहा है इस अवज्ञा पर वह धुतकार दिया गया और शैतान हो गया।

शैतान ने अल्लाह से प्रार्थना की कि मुझे क़यामत तक की छूट मिले मैं आदम की सन्तान से अवज्ञा करवा कर अपना बदला लूंगा। अल्लाह की मर्जी उस की मसलहत उसको छूट दे दी, लेकिन यह भी कह दिया कि मेरे नेक बन्दों पर तेरा वश न चलेगा, और जिसे तू बहकावे गा अगर वह हमारी ओर झुकेंगें और क्षमा चाहेंगे तो उनको क्षमा कर दूंगा। यह वाक्य विस्तार से पवित्र कुरआन में उल्लेखित है।

वास्तव में मानव के भटकने का कारण यही शैतान की शत्रुता और बुरे नफ्स की स्वतंत्रता है। शैतान मानव को विधाता से हटा कर दूसरों के आगे झुकाता है, किसी पेड़ के सामने, किसी पहाड़ के सामने, नदी तथा समुद्र के सामने, सूर्य तथा चन्द्रमा के सामने जब कि स्वयं सृष्टा का आदेश है कि सजदा तथा उपासना सृष्टि की नहीं सृष्टि के रचयता केवल सृष्टा की करना है तो फिर उस का विरोध क्यों? रहा यह विचार की कण–कण में ईश्वर है यह अद्वैतवाद का गलत विचार है, इस विचार के अनुसार तो सभी ईश्वर होंगे, फिर कौन उपास्य और कौन उपासक? कहना यूं चाहिए कि कण कण ईश्वर की दृष्टि में है कुछ उससे छुपा नहीं और यूं कहें कि:

कण कण हमें बताता है
केवल एक विधाता है
हमें जर्रा जर्रा पता दे रहा है
खुदा है, खुदा है, खुदा है, खुदा है

प्रिय सज्जनों! विधाता की सब से बड़ी अवज्ञा किसी को उसका साझी बनाना है। आज भी जब कोई अपने जीवन साथी का हक किसी और को देता है तो समाज उस से घृणा करता है। एक अच्छा इन्सान ऐसे लोगों का मुंह भी नहीं देखना चाहता जो अपने जीवन साथी का हक किसी और को देता है, फिर यदि कोई जीवन दाता का हक किसी वृक्ष, नदी, सूर्य अथवा महापुरुष आदि को दे वह घृणित क्यों न होगा। पवित्र कुरआन ने तो ऐसों के विषय में स्पष्ट घोषित किया है कि वह बिना तौबा (पाश्चाताप) मर गया तो उस की नजात (मोक्ष) नहीं।

सोचिये यह धरती किस ने बनाई? इस पर अनाज़ किस ने उगाया? हम ने अनाज़ खाया, हमारे शरीर में जो अनाज़ से रक्त बनने की व्यवस्था है वह कौन करता है? रक्त बन जाने के पश्चात नसों में उस के संचालन की प्रक्रिया कौन करता है? इसी प्रकार के प्रश्न बनाते चले जाइये क्या इन सब का एक ही उत्तर अल्लाह (ईश्वर) नहीं है? फिर हमारी मत क्यों मारी गयी कि हम गैरुल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त) को आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला, आजीविका देने वाला, सन्तान देने वाला, रोग दूर करने वाला, समझने लगे तथा दूसरों के सामने झुकने लगे। हम ईश्वर से तुरन्त क्षमा याचना करते हुए सत्य मार्ग दिखाने तथा उस पर दृढ़ रहने का सामर्थ्य मांगे।

ईश्वर ने हमारी आस्था तथा जीवन यापन के लिये नियम बनाए हैं, वह नियम हम को अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा मिल चुके तथा पूर्णतया सुरक्षित हैं न उनमें कटौती की जा सकती है न कुछ बढ़ाया जा सकता है। बढ़ाना बिदअत, घटाना मुसीबत, अंगूर हलाल, उसकी नबीज हलाल लेकिन उसी को बढ़ा कर और सड़ा दिया तो शराब बन कर हराम हो गई, हमारी बहनों ने जो वस्त्रों में कटौती की तो समाज में फित्ना बन गया।

पवित्र कुरआन में अंकित है कि एक समय अल्लाह ने मानव की समस्त आत्माओं को जमा कर के पूछा था कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सब बोले थे क्यों नहीं। परन्तु यह इकरार (अंगीकार) हम भूल गये और दूसरों को रब समझने लगे। अल्लाह ने हमारे पथ प्रदर्शन के लिये जो पैगम्बर भेजे तो हर पैगम्बर (सन्देष्टा) ने यही सन्देश पहुंचाया कि केवल एक खुदा (ईश्वर) की उपासना करो। हर संस्था का एक सिलेबस होता है, यह पैगम्बर लोग मानवता का सिलेबस लाते रहे हैं, और अन्त में अन्तिम सन्देष्टा द्वारा जो सिलेबस आया वह पूर्णतया सुरक्षित भी है तथा सरलता पूर्वक उपलब्ध भी। प्रिय देश भ्राताओ! हो सकता है आप को झिझक हो कि हज़रत मुहम्मद साहब तो मुसलमानों के हैं हम उन की शिक्षाएं कैसे लें? परन्तु यह आप का भ्रम है, मन जब एक सत्य की पुष्टि कर रहा है तो उसे मान लेने ही में भला है। मुहम्मद (सल्ल०) तो समस्त मानव के हैं।

पहला पुरुष "आदम (अ०)" पैगम्बर भी थे, पैगम्बरी का यह सिलसिला चलता रहा हर काल तथा हर क्षेत्र में पैगम्बर आते रहे, समयानुकूल नियमों में बदलाव होता रहा परन्तु अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद के आ जाने के पश्चात दीन मुकम्मल होने की घोषणा हो गई। अब न कोई नया दीन (धर्म) आएगा न कोई नया नबी अतः अब आखिरत की ज़िन्दगी में जहन्नम की आग से नजात के लिये हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाना और उन का अनुकरण करना अनिवार्य है।

अन्तिम सन्देष्टा हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का वर्णन सभी ईश ग्रन्थों में था परन्तु शैतान के बहकाने से पिछले लोगों ने उसे छुपा दिया। हिन्दू धर्म तो वास्तव में सनातन धर्म है जो वेदों पर आधारित है, यदि यह वेद ईश

ग्रन्थ हैं तो इन में भी अन्तिम नबी हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का उल्लेख अवश्य रहा होगा कुछ विद्वान वेदों में, कुछ स्थानों पर संकेत करते हैं कि इससे हजरत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ही मुराद (अपेक्षित) हैं। जो भी हो वेदों में आप का उल्लेख हो या मिटा दिया गया हो, इस के स्पष्ट तर्क विद्यमान हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा (नबी) हैं। और अब आप के अनुकरण के बिना खुदा (ईश्वर) को प्रसन्न नहीं किया जा सकता तथा जहन्नम की आग से छुटकारा नहीं पाया जा सकता।

फिर मैं कहती हूं, अल्लाह के अलावा किसी और का सजदा दीवार बनता है, अल्लाह और बन्दे के बीच, जो लोग अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान ला चुके हैं और गैरूल्लाह को सजदा करते हैं वह भी खुदा के प्रकोप के भागीदार हैं। प्रिय बन्धुओ! अब आप देर न करें किसी भी समय अन्तिम यात्रा आरंभ हो सकती है, उस यात्रा का टिकट आवश्यक है, उस यात्रा का टिकट है अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान उनको अन्तिम सन्देष्टा मानना यदि यह टिकट न हुआ तथा उनका अनुकरण न हुआ तो वहां के कारागार से छुटकारा असम्भव है।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद साहब को कुबूल करके जो नूर मिलेगा उससे, मुक्ति प्राप्ति की सारी रूकावटें खत्म हो जायेंगी, सारे रास्ते खुल जायेंगे, सारे मकसद मिल जाएंगे। आप सभी सदा के लिये मुक्त पा जायेंगे।

आप लोगों की ये बात अच्छी है कि जो बात दिल को छू जाए गवारा करे वही काम करते हैं, यानी दिल के अन्दर में जो बात आती है उसे मानते हैं बस। लेकिन आप ये भी जानते है कि जब कोई परीक्षा देना होती है तो ये फिक्र रहती है कि सेलेबस में क्या है फिर भले ही कोई टापिक पसन्द न आए उसे पढ़ते हैं यूं लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि हम इसे छोड़ दें और ज़्यादा नम्बर का सवाल इसी में से पूछ लिया जाए।

जब बीमार होते हैं तो ये देखते हैं कि डॉक्टर ने पर्चे पर क्या लिखा है भले ही दवा कड़वी लगे लेकिन खाना पड़ती है क्योंकि यहां सेहत का मामला है।

जब मौत का फरिश्ता हमारे सामने आ पहुंचेगा तब हम ये नहीं कह सकेंगे कि अभी हमारा दिल गवारा नहीं कर रहा अभी अंदर से नहीं आ रहा है अभी हम तुम्हारे साथ नहीं चल सकते उस समय न किसी से मदद मांग सकेंगे न इज़ाज़त।

डिग्री के मामले में सिलेबस की बात मानते हैं।

सेहत के मामले में डाक्टर का पर्चा महत्वपूर्ण होता है यानी यहां पर भी दिल की नहीं दिमाग़ की बात मानी जाती है।

अपने मालिक की खुशी के लिये जो रास्ता है वो आपके हाथ में पहुंच चुका है, आप ऊपर वाले की खुशी के लिये बुद्धि की बातें मानेंगे या अंदर से आवाज आने का इन्तेज़ार करेंगे?

याद रखिये हर जानदार चीज़ को मौत का मजा चखना है। ज़िन्दगी और मौत के बीच एक सांस की दूरी है। जब हम समझते हैं कि फुलां शख्स मर गया तब हक़ीक़त में उसकी ज़िन्दगी शुरू होती है।

आप अपने मालिक से वादा करके आए है कि ''आप हमारे रब हैं'' तो दुनिया में भी आप ही हमारे रब होंगे। जैसे ही आपकी सांस टूटेगी सबसे पहला सवाल आपसे पूछा जाएगा कि तुम्हारा रब कौन? किस–किस का नाम लेंगे आप, तब आपके हाथ में अपनी गलती सुधारने का मौका नहीं बचेगा।

गुज़रे कल में जो ग़लती हुई है उसे आज सुधार लीजिए आने वाला कल क्या लाएगा कुछ ख़बर नहीं।

❖❖❖

नैतिकता- स्वतन्त्रता का मूल आधार

आरिफ़ा ख़ातून

स्वतंत्रता एक ऐसा नैसर्गिक अधिकार है जो हम सभी को एक साथ लाता है। यह जाति, धर्म, रंग, क्षेत्र, विचारधारा और लिंग के भेदभाव से परे है। स्वतंत्रता हम सभी का जन्मसिद्ध अधिकार है, और हमें इसे हासिल करने के लिए एक साथ मिलकर प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने और पूर्ण विकास और प्रगति हासिल करने के लिए एक मुक्त वातावरण आवश्यक है। जब लोग भय, पूर्वाग्रहों और बाधाओं से मुक्त होते हैं, तो वे स्वयं का चौमुखी विकास कर सकते हैं।

एक ओर स्वतंत्र वातावरण प्रदान करके, हम लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ बनने के लिए सशक्त बना सकते हैं, जिससे एक अधिक जीवंत, विविध और समृद्ध समाज बन सकेगा, तो दूसरी ओर नैतिक मूल्य हमारे विचारों और कार्यों को निर्देशित करने वाले सिद्धांत और मूल्य हैं जो हमें बताते हैं कि क्या सही है और क्या ग़लत है।

नैतिकता हमें सिखाती है कि हम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कैसे करें ताकि हम दूसरों के साथ प्यार और करुणा से पेश आएं और समाज के लिए अच्छा काम करें। स्वतंत्रता हमें अपने जीवन को अपने तरीके से जीने का अवसर देती है, लेकिन नैतिकता हमें सिखाती है कि हम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग कैसे करें ताकि हम अपने और दूसरों के लिए अच्छा काम करें।

हालांकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता आवश्यक है, लेकिन सभी प्रतिबंधों से पूर्ण स्वतंत्रता संभव या वांछनीय नहीं है। कुछ सीमाएं आवश्यक हैं। असीमित स्वतंत्रता के दूरगामी परिणाम हो सकते हैं, जिसका प्रभाव न केवल व्यक्तियों पर बल्कि जगत की संपूर्ण व्यवस्था पर भी पड़ता है। बेलगाम स्वतंत्रता अराजकता और अव्यवस्था को जन्म दे सकती है, जिससे दूसरों को नुकसान हो सकता है और सामाजिक संरचनाएं बाधित हो सकती हैं।

सृष्टा ने वास्तव में मानवता को इस दुनिया और उसके बाहर एक सामंजस्य और पूर्ण अस्तित्व की ओर मार्गदर्शन करने के लिए नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों की स्थापना की है। ये नैतिक मूल्य एक दिशा सूचक यंत्र के रूप में कार्य करते हैं, जो हमें करुणा, सहानुभूति, न्याय निष्पक्षता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, आदर, अनुशासन और जिम्मेदारी, दया, आत्म–अनुशासन की ओर निर्देशित करते हैं।

नैतिक मूल्य वह आधार हैं, जिस पर हम उद्देश्य, संतुलन और सद्भाव का जीवन बना सकते हैं। वे हमें जीवन की चुनौतियों से निपटने और हमारी उच्चतम आकांक्षाओं के अनुरूप विकल्प चुनने में मदद करते हैं। इन मूल्यों का अनुसरण करते हुए हम एक ऐसी दुनिया बना सकते हैं जो सुंदरता, ज्ञान और प्रेम को दर्शाती है।

ये नैतिक मूल्य इस दुनिया और उसके बाद शांतिपूर्ण और सफल जीवन के लिए आवश्यक हैं। क्या हम इन मूल्यों को अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं, और वे हमें एक उज्जवल, अधिक प्रेमपूर्ण भविष्य की ओर मार्गदर्शन कर सकते हैं।

यह चिंताजनक है कि सामाजिक मानदंड और मूल्य तेजी से बदल रहे हैं, अनैतिक माने जाने वाले व्यवहार सामान्य होते जा रहे हैं। इसके लिए सांस्कृतिक मूल्यों और मान्यताओं को बदलाव, मीडिया और प्रौद्योगिकी के माध्यम से एक्सपोजर, असंवेदनशीलता में वृद्धि, पारम्परिक नैतिक ढांचे और अधिकार का क्षरण, व्यक्तिवाद और आत्म–अभिव्यक्ति पर बढ़ता

जोर, सामाजिक एकता और सामुदायिक मूल्यों का क्षरण, हानिकारक या शोषणकारी व्यवहारों की स्वीकार्यता में वृद्धि, युवाओं में भ्रम और भटकाव जैसे विभिन्न कारकों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। स्वतंत्रता के नाम पर नैतिक मूल्यों को त्यागने का चलन बढ़ता जा रहा है। हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि नैतिकता स्वतंत्रता की नींव है।

नैतिकता स्वतंत्रता का आधार इसलिए है, क्योंकि यह हमें अपने कर्तव्यों और अधिकारों के बारे में सिखाती है। नैतिकता के बिना, स्वतंत्रता अराजकता में बदल सकती है। हमें अपने विचारों और कार्यों में नैतिकता का पालन करना चाहिए, ताकि हम स्वतंत्रता का सही अर्थ समझ सकें और इसका सम्मान कर सकें।

नैतिक मूल्यों को अपनाकर, हम व्यक्तियों को ऐसे विकल्प चुनने के लिए सशक्त बनाते हैं जो दूसरों की भलाई का त्याग किए बिना खुशी और समृद्धि लाते हैं। नैतिकता वह दिशा सूचक यंत्र है जो हमें हमारी पूरी क्षमता की ओर मार्गदर्शन करती है, एक ऐसे समाज का पोषण करती है जो लचीला, दयालु और स्वतंत्रता की रोशनी से जगमगाता है।

सुख और शांति की तलाश में, हमें क्षणभंगुर सुखों और अस्थायी पलायन से धोखा नहीं खाना चाहिए। सच्ची संतुष्टि और स्थायी आनंद के लिए, हमें मानवीय रिश्तों में अपने मार्गदर्शक नियम के रूप में नैतिकता के कालातीत ज्ञान की ओर मुड़ना चाहिए। विवाह जैसी पवित्र संस्था के बाहर खुशी की तलाश दर्द, अफसोस और लालसा की भूलभुलैया में बदल सकती है।

नैतिकता हमें जीवन की चुनौतियों से पार कराती है, यह सुनिश्चित करती है कि हमारे रिश्ते विश्वास, सम्मान और प्रतिबद्धता की नींव पर बने हैं। यह वह लंगर है जो अशांत समय में भी हमें स्थिर रखता है।

हमें स्वतंत्रता के उन मिथ्या नारों से प्रभावित नहीं होना चाहिए, जो खुशी का वादा करते हैं, लेकिन केवल अराजकता और निराशा प्रदान करता है। सच्ची स्वतंत्रता नैतिक ज़िम्मेदारी को अपनाने में है, उसे त्यागने में नहीं। साथ मिलकर, हम एक उज्जवल भविष्य को आकार दे सकते हैं, जहाँ युवा पीढ़ी ज्ञान, नैतिकता और सच्ची स्वतंत्रता के प्रकाश द्वारा निर्देशित होकर आशा की किरण बनेगी। यह समय हम सभी को एकजुट करने वाले सामान्य नैतिक मूल्यों को फिर से खोज कर हमारे समाज के ताने–बाने को पुनर्जीवित करने का है। हमें उन शाश्वत सिद्धांतों को सार्वजनिक चर्चा में सबसे आगे लाना चाहिए जिन्होंने हमें हमेशा एक व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया है।

मानव जीवन और गरिमा का सम्मान, सबके प्रति दया और सहानुभूति, शब्दों और कार्यों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, निःस्वार्थता और व्यापक भलाई के लिए सेवा, परंपरा, संस्कृति और विरासत के प्रति सम्मान आदि ऐसे साझा मूल्य हैं जिन्हें अपनाकर हम अपने देश की नैतिक नींव को मजबूत कर सकते हैं। इन मूल्यों को अपनाकर, हम उद्देश्य, समृद्धि और सद्भाव के जीवन के दरवाजे खोल सकते हैं।

मानवीय अनुभवों की जटिलता को स्वीकार करके और एक सूक्ष्म दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर हम स्वतंत्रता के लिए एक नैतिकता–आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकते हैं जो नैतिक विकास और ज़िम्मेदारी को प्रोत्साहित करते हुए व्यक्तिगत स्वायत्तता का समर्थन करता है। आइए हम नैतिक स्वतंत्रता को अपनाएं और एक ऐसी दुनिया बनाएं जहां लोग फल–फूल सकें, आगे बढ़ सकें। आइए हम इस परिवर्तनकारी यात्रा पर निकलें, जहां नैतिकता और स्वतंत्रता मिलकर सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करती है। ◆◆

उड़ने वाला जानवर

मायल ख़ैराबादी

"हाँ भाई जान! इस बार क्या विचित्र वस्तु लाये आप?'' शम्मो बाजी ने भाई जान से कहा हम सब ही ही ही ही करके हंसने लगे। हम जानते थे कि भाई जान हमारे लिये कोई न कोई अनोखी निराली वस्तु ज़रूर लाये होंगे। उसी को तो शम्मो बाजी ने विचित्र वस्तु कहा, तो सचमुच हम सब हंसे। हम सब इस तरह हंसे तो पम्मी ने चचा मियाँ का एक शेर पढ़ा– यूँ हंसना है सख़्त बुरा–ही ही ही ही ही ही ही

''अच्छा भाई! लो नहीं हंसते, हम सबने अपने अपने मुँह पर हाथ रख लिया, हंसी को रोका और भाई जान की तरफ़ देखने लगे। भाई जान अपने बक्स में से ''विचित्र वस्तु'' निकाल रहे थे, लेकिन यह क्या, उन्होंने तो एक लिपटा हुआ कागज़ निकाला। हम सब समझे शायद इस वर्ष का कैलेण्डर है, लेकिन खोला तो सब मारे खुशी के उछल पड़े, हम सबकी जबान से निकला– ''उड़ने वाले जानवर''

"वाह भाई वा! ऐसे भी जानवर होते हैं जो उड़ते हैं।'' शमसी ने आश्चर्य के साथ कहा और भाई जान ने जवाब दिया, ''होते तो हैं, ये उन्हीं जानवरों के चित्र हैं।''

हमने चित्रों पर नजरें जमा दीं। चिमगादड़ के बारे में तो हम जानते हैं कि वह उड़ता है, लेकिन उड़ने वाली मछली, उड़ने वाला मेंढ़क, उड़ने वाली लोमड़ी, उड़ने वाली गिलहरी और उड़ने वाला गिरगिट न देखे थे न सुने थे। हमें विचित्र तो लगा लेकिन हमें विश्वास है कि भाई जान झूठ नहीं बोलते, तो भाई ऐसे जानवर भी होते होंगे, हमने दिल ही दिल में कहा, ''अल्लाह ने न जाने कैसी चीजें संसार में पैदा की हैं, यह सब उसकी कुदरत की कारीगरी है।''

''अच्छा भाई! यह देखो..... ..'' भाई जान इन जानवरों के सम्बन्ध में बताने लगे, ''हाँ तो देखो, यह चिमगादड़ है। चिमगादड़ के सम्बन्ध में तुम जानते ही हो कि उसके चार पैर होते हैं और दो पर भी। इस तरह यह चौपाया भी है और पक्षी भी, और इसके सम्बन्ध में मैंने बचपन में एक मजेदार कहानी पढ़ी थी।''

''कहानी'' पम्मी का चेहरा चमक उठा। उसे कभी इन ज्ञान बढ़ाने वाली बातों में मजा न आया। हाँ, जब कहानी का नाम आया तो खूब दिल लगा कर कहानी सुनी, ''तो भाई जान! काहनी सुनाइये।''

सच पूछिये तो कहानी किसे अच्छी नहीं लगती। हम भी पसन्द करते हैं, तो भाई हम भी कान लगाकर सुनने लगे। भाई जान कह रहे थे।

''एक बार चौपायों और पक्षियों में लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई बहुत दिनों तक होती रही। कभी चौपायों का पलड़ा भारी रहता तो कभी पक्षियों का। हार जीत का फैसला नहीं हो पाता था। हाँ लड़ाई में हानि बहुत हुई थी। एक भारी हानि यह हुई थी कि चौपायों ने पानी पर कब्ज़ा कर लिया था और वे पक्षियों को पानी के पास तक न आने देते थे। इसके जवाब में पक्षियों ने सारे वृक्षों की पत्तियां, पौधे और फल फूल नोच कर नष्ट कर दिये थे। अगर पक्षी प्यास से परेशान थे, तो चौपायों को खाने चुगने के लिये कुछ न मिलता था, वे भी सूखकर कांटा हो रहे थे।''

''यह हाल था और दोनों

दिल से यही चाहते थे कि अब लड़ाई बन्द हो जाये। मगर भाई वह जो एक ''आन बान'' होती है ना! कि ऊँह, क्या हम किसी से कम हैं। बस इसी आन बान की वजह से कोई ज़बान से न कहता था कि लड़ाई समाप्त करो।''

''इस लड़ाई में चिमगादड़ ने अब तक भाग नहीं लिया था और इसका एक कारण था। चिमगादड़ को दिन में दिखाई नहीं देता और लड़ाई दिन को हुआ करती थी, दूसरा कारण यह था कि चिमगादड़ अभी तक यह निर्णय न कर सके थे कि वे चौपायों में से हैं या पक्षियों में से, क्योंकि उनके पर भी हैं और चार पैर भी।''

''आखिर एक दिन एक बूढ़े चिमगादड़ ने कहा कि चार पैर होने के नाते हमें चौपायों से भी प्रेम है, और पर होने के नाते पक्षियों से भी सहानुभूति है। चलो किसी की ओर से लड़ने के बदले इनमें सुलह सफाई करा दें.....''

''वाह वा वाह वा'' पम्मी को मजा आने लगा। भाई जान कहानी कहते रहे, ''अच्छा तो चिमगादड़ चौपायों के पास गये और कहा, ''यह देखो, हमारे चार पैर हैं, हम भी चौपाये हैं, इसलिये हमें तुमसे सहानुभूति है। देखो, लड़ना अच्छा नहीं, लड़ने से जान भी जाती है और माल भी नष्ट होता है, इसलिये लड़ाई बन्द करो।'' कुछ चिमगादड़ पक्षियों के पास गये और कहा कि देखो हमारे पर हैं, हम भी पक्षी हैं, इसलिये हमें तुमसे सहानुभूति है, देखो लड़ना अच्छा नहीं, लड़ने से जान भी जाती है और माल भी नष्ट होता है, इसलिये लड़ाई बन्द करो।''

''चौपाये और पक्षी सब लड़ाई से परेशान तो हो ही चुके थे, दोनों तरफ़ वालों ने कहा, ''अच्छा तो तुम ही मेल करा दो। यह सुनकर चिमगादड़ मेल कराने के लिये तैयार हो गये। एक बूढ़े चिमगादड़ ने लड़ाई की हानियाँ समझाईं। उसकी बात सबकी समझ में आ गई और फिर चौपायों तथा पक्षियों ने लड़ाई बन्द करने का एलान कर दिया। लड़ाई बन्द हुई तो पक्षियों को पानी मिला और चौपायों को हरा चारा और पत्ते और चिमगादड़ को यह गौरव मिला कि उसे चौपायों ने अपनी जाति का माना और पक्षियों ने अपनी जाति का.....''

''कैसी मजेदार है कहानी।'' हम सबने दिल ही दिल में कहा। इसके बाद भाई जान ने उड़ने वाले मेंढ़क की तरफ इशारा करके बताया कि इसके पैरों में अंगुलियों के बीच पैराशूट की तरह जो झिल्ली दिखाई देती है यह इतनी लम्बी चौड़ी होती है कि मेंढ़क भी इतना नहीं होता मेंढ़क तो बस अधिक से अधिक चार पाँच इंच लम्बाई चौड़ाई में होता है और यह झिल्ली एक फुट की लम्बाई चौड़ाई में होती है। इन्ही झिल्लियों की मदद से यह मेंढ़क उड़ता है। ऐसे मेंढ़क जावा और सुमात्रा के टापुओं में बहुत पाये जाते हैं।''

''अच्छा अब देखो यह चित्र क्रमांक तीन, देखने में इसकी शक़्ल लोमड़ी से मिलती है, इसीलिए इसे उड़ने वाली लोमड़ी कहते हैं। इसके दोनों ओर गर्दन से पूंछ तक एक प्रकार की खाल सी पड़ी होती है। यह लोमड़ी जब इस खाल को उठा देती है तो खाल में हवा भर जाती है और लोमड़ी की उड़ान शुरू हो जाती है। समझे!''

''जी!'' हम सबने कहा और भाई जान ने चित्र क्रमांक चार पर अंगुली रख दी और बोले, ''यह है उड़ने वाला गिरगिट।''

''यह गर्म देशों में होता है और वहां के लोग इसे ''ड्राको'' कहते है। इसके शरीर के दोनों तरफ बहुत पतली झिल्ली सिमटी हुई हालत में रहती है।

ड्राको जब इस झिल्ली को खोलता है तो यह तितली के पर के समान फैल जाती है। इसी की मदद से ड्राको उड़ सकता है।''

''अच्छा अब देखिये यह चित्र क्रमांक पांच, इसको तुम पहचान ही लोगे और ये हैं इसके पर।''

भाई जान ने परों पर अंगुली रख कर बताया, ''यह मछली तैरती तो है ही लेकिन जब कोई समुद्री जानवर इस पर हमला करता है तो यह अपने दोनों परों की सहायता से उड़ कर दूर जा गिरती है और हमला करने वाला जानवर अपना सा मुँह लेकर रह जाता है।''

''कभी कभी ऐसा होता है कि जब ये मछली उछाल लगाती है तो जहाजों पर आ गिरती है और जहाज वाले इसे पकड़ लेते हैं।''

''जहाज वाले कैसे पकड़ लेते हैं, वह उड़ क्यों नहीं जाती?'' शौकत ने चित्र देखते हुए पूछा। भाई जान ने बताया कि यह मछली पानी के अन्दर तो उड़ सकती है लेकिन पानी के बाहर इसका जोर समाप्त हो जाता है, पानी के बाहर यह नहीं उड़ सकती।''

अच्छा भाई अब देखो यह चित्र क्रमांक छः, पहचानों तो, यह है उड़ने वाली गिलहरी। इसके दो पहलुओं की खाल अगली और पिछली टांगों के बीच लटकती रहती है। इसी खाल की मदद से यह गिलहरी उड़ती है, मगर इतना ही उड़ती है कि बस एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक पहुंच जाये। अधिक दूर नहीं उड़ सकती, यह गिलहरी वृक्ष से नीचे कभी नहीं उतरती, वृक्ष ही पर रहती है।''

भाई जान यह सब बता चुके थे हम सबके मुँह से निकला ''क्या खुदा की कुदरत है, वह जिसे जैसा चाहे बना दे।''

और भाई जान ने कहा, "बिल्कुल सच कहते हो, अब जाओ खेलो।''

हम सब इधर उधर जाकर खेलने लगे।

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

स्वास्थ्य

ज़्यादा सोना भी बना सकता है बीमार

डॉ0 रूपेन्द्र श्रीवास्तव

ज़्यादातर डॉक्टर बताते है कि सेहतमंद दिनचर्या के लिए 8 घंटे की नींद बहुत जरूरी है। रात में अच्छी और गहरी नींद लेने से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। नींद न पूरी होने से कई तरह की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ज़रूरत से ज़्यादा सोना भी आपकी सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। जानते है ज़्यादा सोने के कारण होने वाली दिक्कतों के बारे में:–

नींद पूरी करने के साथ ऐक्टिव लाइफ स्टाइल मेंटेन करना भी जरूरी है। नींद पूरी होने जाने के बाद बिस्तर छोड़ देना चाहिए। च्यादा सोने से कई तरह की समस्याएं पैदा होती हैं

डिप्रेशनः–

ज़रूरत से ज़्यादा सोना डिप्रेशन का भी कारण बन सकता है। बहुत देर सोने वाला व्यक्ति लगातार आलस्य और सुस्ती में रहता है, जिसके कारण उसका किसी काम को करने में मन नहीं लगता है। इसके साथ ही, वह काफी अकेला भी महसूस करता है। इस स्थिति का लगातार बना रहना कई बार व्यक्ति को अवसाद की ओर ले जाता है।

मोटापाः–

ज़रूरत से ज़्यादा सोने से आप मोटापे का शिकार हो सकते हैं। दरअसल ज़रूरत से ज़्यादा सोने से शरीर का मेटाबॉलिज्म धीमा हो सकता है, जिससे वजन बढ़ने की आशंका बढ़ जाती है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि जो लोग रोजाना 9–10 घंटे से ज़्यादा सोते हैं, उनमें मोटापे का खतरा बढ़ जाता है। उनमें डाइजेशन की भी समस्या होती है।

डायबिटीजः–

ज़रूरत से ज़्यादा सोने के कारण डायबिटीज भी हो सकती है। दरअसल, जब हमारा शरीर बहुत देर तक कोई फिजिकल एक्टिविटी नहीं करता है, तो इससे हमारे शरीर में ग्लूकोज का लेवल बढ़ने लगता है। इतना ही नहीं, अधिक नीद लेने से इंसुलिन सेंसटिविटी भी प्रभावित होती है। इससे टाइप–2 डायबिटीज का खतरा बढ़ सकता है।

पीठ में दर्दः–

ज़्यादा देर तक सोना पीठ, कंधे, गर्दन और सिरदर्द का कारण भी बन सकती है। दरअसल, जब आप ज़्यादा देर तक सोते है, तो इससे शरीर में ब्लड सर्कुलेशन सही से नहीं हो पाता है। इससे शरीर में दर्द की समस्या होने लगती है।

(लोकबन्धु अस्पताल, लखनऊ)

❖❖❖

अनुरोध

हम अपने पाठकों की दीनी मालूमात और धार्मिक ज्ञान को बढ़ाने के लिए ''कुरआन की शिक्षा'' और ''प्यारे नबी की प्यारी बातें'' जैसे लेख निरंतर प्रकाशित करते हैं। उनका सम्मान हमारा और आपका कर्तव्य है। इसलिए जिन पन्नों पर ये आयतें और हदीसें लिखी हैं, उनका एहतिराम हमारी दीनी जिम्मेदारी है इसका ख़्याल रखें, इंशाअल्लाह हम सवाब के मुस्तहिक एवं पात्र होंगे।

(इदारा)

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक: **22/03/2025**   तारीख ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंजाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकजा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT — NADWATUL ULAMA

ATIYA — NADWATUL ULAMA

BUILDING — NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात / अतिया / तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 02

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3